Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री दुर्गाय नमः

प्राचीन गुप्त विद्याओं का अद्भुत
चमत्कार ग्रंथ

सेवड़े का जादू

अर्थात्

यन्त्र तन्त्र मन्त्रों का भण्डार
जादू सीखने वालों, के लिए अति उपयोगी ग्रंथ

प्रकाशक

मीनल एण्ड कम्पनी सतघड़ा मथुरा ।

मूल्य १५)००

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दक्षिण का जादू

श्री गुरु गणेश चरण कमलेभ्यो नमः

चंडी चंडी चाण्डेयान्निज भक्तान शिवप्रदान
प्रणमामि पयाभक्तायार्घ्यं निर्भिवघन सिद्धये।

सर्व वशीकरण मन्त्र

दोहा—तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण एक मन्त्र है तज दे बचन कठोर ॥

सबसे मधुर बोलना सर्व वशीकरण एक मन्त्र है, परन्तु संसार बड़ा ही कठिन है, इसमें ऐसे नुस्खों से काम नहीं चलता है इसलिए मंत्र द्वारा वशीकरण की विधि लिखते हैं।

वशीकरण पुष्प मन्त्र

ओं चामुण्डे जय जय बस्यम कुरु जय जय सर्व सात्वान्तम स्वाहा।

विधि

रविवार या गुरुवार को उक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रित किया हुआ पुष्प जिसे दिया जायेगा वह वश में हो जायेगा।

वशीकरण मन्त्र

ओं नमों कट कट विकट घोर मिणी अमुक मेन मातव

इस मन्त्र ग्रहण को में सौ बार जपे फिर रविवार को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसे अभिमन्त्रित करके अन्न भोजन करे और भोजन करते समय उनका नाम लेता जावे जिसे वश में करना चाहे तो शीघ्र बशीभूत होता है।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु का राजा मोहू परजा मोहू ब्राह्मण वणिया हनुमन्त रूप में जगत मोहु जो रामचन्द्र परम पिता गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

विधि

इस मन्त्र को प्रथम इक्कीस दिन तक एक सहस्र प्रतिदिन जपे और चन्दर फूल दीप नैवेद्य नित्य प्रति आरती करता रहे तो रामचन्द्रजी का ध्यान करके चौराहे की धूल उठाकर उस पर २१ बार मन्त्र को जपकर माथे पर बिन्दी लगाले जो देखेगा वह वश में हो जायेगा।

लौंग मोहिनी मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु का कामरू देश में कामक्षा

विधि

देवी जहां बसे इस्माइल योगी दीन्ही एक लौंग राती प्राती। दूजी लौंग दिखावे राती। तीजी लौंग रहे वह राय चौथी लौंग मिलाके आखें नहीं आवे तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुवां बावड़ी । छिटक मरे ओं असो आदेश गुरु का भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरों वाचा ।

विधि

ग्रहण की रात को चार लौंग लेकर चार दिशाओं में धरे । बीच में चौमुखी दीपक जलावे फिर धूप सुगन्ध माला नेवेद्य चढ़ाय एक सहस्त्र जपे सिद्ध होने पर सात मन्त्र पढ़ कर लौंग दे जो खाय वश में हो जाय ।

मोहनी तिलक

ओं उड्डा भमेश्वराय सर्व नाथ अं आ इं ईं उं ऊं ऋ ॠ हुं फट स्वाहा

सिद्ध करने की विधि

इस मन्त्र की एक लक्ष्य प्रमाण जपकर सिद्ध कर लेवे फिर निम्नलिखित विधि अनुसार तिलक लगावे सर्व मोहन कार्य सिद्ध हो ।

मोहन मन्त्र

कुंकुम और सिन्दूर को लावे ।
गोरोचन भी संग मिलावे ।।
आंवला रस में फेर फुरावे ।
वाको सुन्दर तिलक लगावे ।
देख जगत मोहित हो जावे ।

वशीकरण मन्त्र

ओ नमो भगवते उड्डा महेश्वराय मोहदय मोदय मिल-मिल मिल ठः ठः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि

कागनी तगर कूट चन्दन नाग केशर काले धतूरा का पचाँग यह सब औषधि बराबर लेकर गोली बनाये छाया में सुखावे फिर वह गोली पुरुष व स्त्री खावे या पान में देवे। वह जब तक बश में रहे, गोलियों को सात वार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लेवे। वह

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ओ नमो भुवन भास्कराय: जग्दवश्यं द्रव्या।
भवानि पश्चाय सुख पश्यन्यि तेतं वश्य स्वाहा॥

विधि

चाक की मिट्टी आग की राख दोनों को मिला कर प्रथम चौका लगावे फिर स्नानादि से निवृत्त हो प्रातःकालसूर्योदय से अर्द्धासन द्वारा बंठे और विश्वास पूर्वक सात दिन तक जाप करे, एक स्वास में समस्त मन्त्र को प्राप्त करे। इस प्रकार करने से बयालीसं दिन में मन्त्र सिद्ध हो जायगा।

गणपति वशीकरण मन्त्र

एक दन्त महावीर्यमन्मो पुरुष परिणयम।
सिद्ध यंत्रसर्घ कार्याणी तुम प्रसादत्त गणेश्बरह॥

विधि

धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल पुंगीफल इत्यादि सब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामग्रियों को इकट्ठा करके श्रीगणपति की मूर्ति पीली मिट्टी की बनाये। इसके पश्चात एकाशन से गणेश चौथ को दस हजार जप रुद्राक्ष की माला से करे दूसरे दिन दस हजार आहुति उत्तम सामग्री जौ तिल चावल धूप पांच मेवा कमसेकम एक आहुति में तीन मासे घी हो। इसी हिसाब से दस हजार आहुति दे और फिर सात दिन तक १०१ जप नित्य करे तो सातवे दिन श्री गणेशजी साधक को सन्तुष्ट करते हैं। मगर हिम्मत से सबविधि करे भयभीत होने से पागल हो जाने का भय है।

भूत वशीकरण मन्त्र

ओं चन्द्र मौलिक शंकरो भूतनाथौ गिरजापतं ।
नीलकंठाय सर्प विभूषित डमरू त्रिशूल धरंनमौ ।।

विधि

चन्द्रमा के उदयकाल में नदी तट पर जाकर स्नानादि से पवित्र होवे और बाघाम्बर बिछाकर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठे। उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ जाप करे इक्कीस दिन में मन्त्र सिद्ध को प्राप्त होगा।

अथवा

ओं नमो भगवते ओंकारेश्वराय: ओंकारेश्वरा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि

निर्जन बन में जाकर वट वृक्ष के नीचे कुशासन बिछाकर रात्रि के समय जपे और एकाग्र-चित से भूत-नाथ श्री शंकर महादेव का ध्यान धरे। प्रतिदिन सौ बार मन्त्र का जाप करे। इक्कीस दिन पीछे मन्त्र सिद्धि को प्राप्त होगा।

प्रेम वशीकरण

जिस प्रकार शास्त्रों में भूतों का वर्णन आया है। उसी प्रकार प्रेतों का भी आया है। किसी-किसी सशस्त्र ने प्रेतलोक का भी वर्णन किया है। सांवरी तन्त्र और दक्षिणी साधन जाप पुस्तकों में इसका पूर्ण विवरण है।

प्रेत वशीकरण मन्त्र

ओं डं डीं डूं डुग डुग डीं।

अमुक प्रेम ग्रह हू हू ठः ठः स्वाहा॥

विधि

आदित्य बार को अभिजित नक्षत्र में शमशान भूमि में जाकर मुर्दे की हड्डी लावे और उसकी कील बनावे। फिर किसी मुर्दे मनुष्य की खोपड़ी लावे। मन्त्र जाप कृष्ण पक्ष की अष्टमी को आरम्भ करे और जब मन्त्रासमाप्त हो जाये, तब कील को मुर्दे की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खोपड़ी में गाढ़ दें। इस प्रकार इक्सठ दिन तक प्रयोग करने से मन्त्र सिद्धि को प्राप्त होगा।

भूत विद्या प्रचार

जिस रोग की चिकित्सा झाड़ फूंक कर यन्त्र मन्त्र से सम्बन्ध रखती है। उसे भूत विद्या कहते हैं भूतों की जाति बन्धन, भूत इत्यादि है। इनको उत्तम मध्यम लघु और अधम के नाम से पुकारते हैं। जो आत्माए उत्तम कोटि की होती हैं। वह किसी को हानि नहीं पहुँचाती। मध्यम श्रेणी वाले प्रभाव तोजरूर डालती हैं मगर अधिक कष्ट नहीं पहुँचाती है। यहां तक कि किसी २ रोगी को तो जान पर बन जाती है। गरुण पुराण के मत से मृतक आत्मा का वर्णन हैं, वह यह है कि मनुष्य या पशु कोई भी मरे उसकी रूह फिर दोबारा जन्म नहीं लेती, वह मरी हुई रहती है ओर मृतक के दिन वह सब उठी खड़ी होगी और भूत व आसेव के नाम से पुकारी जायेगी।

भूतों का निवास स्थान

अक्समात भूत शमशान स्थान में या पुराने खण्ड हर में या पुराने पीपल पर या वृक्ष पर ज्यादातर रहा करते हैं अन्धेरी रात्रि ज्येष्ठ की दुपहरी और जिस रात्रि को भयानक पवन चले, तब भूत अक्सर निक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लते हैं भूतों का निवास उन मकानों में भी होता है जहां छः मास तक दीपक न जले या छः मास तक जिनका दरवाजा न खुले। यह निश्चय है कि किसी-किसी तालाब नदी व चौराहे पर भूत प्रकोप किया करते हैं। किसी २ मकान का जहां भूतों का बास हो, लोग छोड़ दिया करते हैं और कहा करते कि इस मकान में रात को नाच-गाने का शब्द सुनाई देता है। अक्सर यह भी देखने में आया है कि यदि कोई हिम्मत करके ऐसे मकानों में रहने भी लगा तो अन्त में उसे उस मकान को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है और जो लोग भूत-प्रेत इत्यादि को नहीं मानते वह भी अक्सर यही करते सुने गये कि भाई संसार में भूत हैं जरूर।

भूत किस पर असर करते हैं

युवकों पर, स्त्रियों पर, जन्मते बालकों पर, सुन्दर स्त्रियों पर, प्रेमियों तथा प्रेमकाओं पर, पूर्व जन्म के कुटुम्बियों पर व रिश्तेदारों पर, स्नेही मित्रों पर श्वेत रंग के पदार्थों पर, सुगन्धित वस्तुओं पर।

भूतों के नाम

वैदिक शास्त्र में भूतों के नाम इस प्रकार हैं। इनको यह नाम से पुकारते हैं। स्कन्ध ग्रह, परस्मार,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शकुनी, रेवती पूतना, गन्ध पूतना, शीत पूतना, मुख मण्डिका, नैन नेम । भूत उत्पत्ति–

जब श्री महादेव के यहां स्वामी कार्तिक का जन्म हुआ था उस समय श्री शंकर जी ने उनको रक्षार्थ भूतों को प्रकट किया था।

मनुष्य पर भूतों के प्रभाव के लक्षण

जिस मनुष्य पर भूतों का कोप होता है उस मनुष्य की दशा इस तरह हो जाती है कि मुंह से बकता है ओर क्षण-क्षण में डरावना सा हो जाता है। अपने आप शरीर को नोचने तथा दांतों से काटने लगता है। ज्वर रहता है आकाश की ओर बड़ी गहरी दृष्टि से देखता है बराबर आंखें काड़ कर अधिक देर तक मनुष्य को घूरता है उन्माद में आकर उछलता है दौड़ता है दातों को होठों से चबाता है और मुँह से झाग डालने लगता है शरीर पीला पड़ जाता है और प्रतिदिन दुर्बलता आती जाती है। कभी-कभी कर-हाने लगता है। जम्हाई लेता है भों और आखों की त्यौरी बदल जाती हैं। किसी-किसी को दस्त हो जाते हैं, रात्रि को नींद नहीं आती है। अकेला ही ऐसी वैसी बातें करता है। ऐसे मनुष्य का फौरन ही इलाज करवाना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालकों पर भूतों का प्रभाव का लक्षण

अंग सिथिल हो जाता है, शरीर के रुधिर की सी दुर्गन्ध आती है दूध नहीं पीता है मुँह टेढ़ा हो जाता है नेनों में आंसू बहने लगते हैं। हाथों को मुट्ठी बांधकर ऐठता है, हाथ-पेर को चबाने लगता है जम्हाई बहुत लेता है मुँह से झाग आने लगता है।

बालकों पर से भूत उतारने की धूनी

सरसों, सांप की कंचुली, कूट और बकरे के बाल, इनकी धूनी दें।

भूत उतारने का मन्त्र

यह मन्त्र भाव प्रकाश और रावण कृत उड्डीस तन्त्र ग्रन्थ से उद्धृत है।

मंत्र—आजनश्चय आक्षीत कामरूपी महाशय बाल मधलधलों नेठामेयो सिरक्षत'।

विधि—मोर पंख से सात बार झाड़ें तो रोगी अच्छा हो जावे। मन्त्र भी सात बार बोलना आवश्यक है।

सकुन भूत का लक्षण

अंग सिथिल हो जाता है, भयभीत होके कांपने लगता है शरीर में गांठें पड़ जाती है। ज्वर का वेग अधिक रहता है दाह अधिक होने लगता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उतारने की धूनी

सांपकी केंचुली, लहसुन, सरसों बलमी को बीट, बकरे के बाल, मैंडे के सींग, घुड़बच–इस धूनी को दें शकुनी भूत उतर जाता है।

शकुन भूत को उतारने का मन्त्र

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधे तो शकुनी भूत भाग जाता है।

यह मन्त्र गौरोचन से अनार की कलम बनाकर लिखा जाता है।

ह्ल ह्ल ओं ह्ल	ह्लीं

द्वितीय मन्त्र

औं	रु	द
ज	ख	पते
कुरु	कुरु	स्वाहा।

यह यन्त्र लिखने की विधि भी प्रथम यन्त्र की तरह यह यन्त्र बालक की पूजा में बाँधा जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रेवती भूत के लक्षण

जिस समय रेवती भूत का कोप होता है तो रोगो खा मुह कभी हरा कभी लाल रंग और कभी पीला-पन लिए होता है। शरीर में पीड़ा होता है, हाथ-पांव काले पड़ जाते हैं, जम्हाइयां अधिक आती है।

रेवती भूत की धनी

कूट राल, गूलर, खस, हल्दी इनकी धूनी दें अथवा चौराहे पर करावे।

रेवती भूत उतारने का मन्त्र

ओं रामबाण हन, हन, मुच मुच ह फट स्वाहा।

इस मन्त्र को पढ़ाता जाय और नीम की टहनी से झाड़ता जावे। एकाशन से सात बार झाड़ देने से रेवती भूत शान्त होता है।

पूतना भूत के लक्षण

शरीर दुर्बल हो जाय, रात दिन नींद न आवे, हर समय कांपता रहे। शरीर से कफ, रोंगी से दुर्गन्ध आवे, प्यास बहुत लगे आंखों की ज्योति क्षण हो, यह पूतना भूत के लक्षण हैं।

पूतना भूत की धूनी

कुत्ते की बीट, बालक के केश, पीपल की जड़, इनकी धूनी दे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गंध पूतना के लक्षण

इसका दवाब ज्यादातर बालों पर ही होता है। बालक ज्यादा रोता है। दूध नहीं पीता, हिचकी व खाँसी का ज्यादा प्रकोप रहता है। शरीर की कान्ति बदल जाती है, रुधिर की बदबू आने लगती है गला सूख जाता है।

गंध पूतना की धूनी

केसर, अगर, कपूर, कस्तुरी इन सबको पीसकर धूनी दे।

गंध पूतना का मंत्र

ओं नमो नारायण हन हन मथ मथ स्वाहा।

इस मन्त्र को सात बार जपकर सिद्ध कर ले फिर शुक या रविवार को सात बार नीम के लहरे से झाड़े तो गंध पूतना भूत भाग जाता है।

बलिदान

कुत्ता की बीट रोगी के बाल, बिनौले-इनको सात बार उतार चौराहे पर रख दे।

शीत पूतना भूत के लक्षण

इसके दवाब में बालक रोता है, कापता है, दांत काले पड़ जाते हैं शरीर शिथिल हो जाता है। यह लक्षण पूतना के हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शील पूतना की धूनी

नीम के पत्तों की धूनी हितकर है।

नैगमेय भूत के लक्षण

इसके प्रभाव में मुंह से झाग आने लगते हैं, शरीर काँपने लगता है। अंगड़ाई अधिक आता है, शरीर में से दुर्गन्ध आती है बकवास ज्यादा करता है, बिना कारण शोरगुल मचाता है यह लक्षण नैगमेय भूत के हैं।

उतार

काली तुलसी, माटेगी कायफल, सिरस की जड़ इनकी धूनी दे।

स्कंध भूत के लक्षण

शरीर से दुर्गन्ध आती है, आँखें भौंहें चढ़ी हुई हो शोर अधिक करता है, यह स्कन्ध भूत के लक्षण हैं।

धूनी

ऊँट के बाल, सरसों के घी में मिलाकर धूनी दें।

भूत झाड़ने का श्री नरसिंह दिव्य मंत्र

ओ३म् भगवते नरसिंहाय अतुलवीर पराक्रम घोर रोद्र महिषासुर रुपाय त्रैलोक्य रोद्र क्षोद्र पाताल हो हो कवि कृमि तड़तड़ाय मोह द्रमि क्षोमय अभियं माधव ही हृदय से अशक्ति स्वाहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महुदा पीर की सिद्धि

ओम नमो विस्थोहिराहान रहीम गजनों से चला मुहम्मदा पीर चला-चला सवा सेर का तोसा खाय कास का धावा जाम सफेद घोड़ा सफेद लगाम उस पर चढ़ें मुहमदा पीर नौसे पलटन पीछे चले नौसे पलटन पीछे चले चल-चल रे मुहमदा पीर, तेरे समान नहीं कोई वीर हमारे शत्रु को पकड़ता लाय हाड़ हाड़ चाम नख सिख राम राम से लाव लाव से ताइयां सिलार जिंद पीर मारतग पीटता उजाड़ता तोड़ता हथकड़ी पांव में बेड़ी गले में तौक उल्टी मुश्क चढ़ाय बुख छुलाय शीश आव मुहमदा पीर, जल्द आव सवारी तेरी खाली पड़ी है। शीघ्र आव सवारी पर सवारी कर खेल खुश हो।

सिद्धि करने की विधि

गुरुवार की रात्री में जमीन को शुद्ध धोकर सवा सेरततंदुल रक्खो उन तादलों पर एक दीपक आटे का बनाकर रखो और घी से जलाओ तात्पश्चात् उस दीपक सुगन्धित पुष्पों की माला पहनाओ, दीपक के आगे लौंग, इलायची, इत्र की शीशी ऋतु फल हलुआ तारह २ की मिठाई बच मेवा रखकर लोहबान की धूनी दो तात्पश्चात् किसी विधवा स्त्री का पश्चिम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की ओर मुख कराके दीपक के सामने सिर के बाल खुलवा कर बैठा ले जावे तो उसके सिर पर पाँच लोग उठाकर रख दो तो मुहम्दा पीर की सवारी अरा जायेगी। सवारी के आते ही सुगन्धित माला व इत्र इलायची पान वगैरह की सवारी की नजर करो। जब सवारी तुमसे प्रसन्न होकर बोले तब तुम अपने हृदय की बातें पूछो। वह सब बतलायेगा और तुम्हारे कठिन कामों को सिद्ध करेंगे।

हाजरात करना

हाजरात मन्त्र

ओं म नमो कमलायै सर्वं सिद्धिये आशुके कर्म कुरु २ स्वाहा स्वाहाः ओम अस्य मंत्रस्य विहवकं ऋषि जगति छंदः कामाख्या देवता प्रणवा शक्ति अव्यक्त कीलक अमुक कर्मेल जपे।

विनियोग मंत्र

श्री अंगष्ठाभ्याम: कामख्यावै तर्जनीभ्यां नम स्वाहाः सर्व सिद्धि दायैमध्यमाग्यंनूप अमुक कर्म अनामिकम्लं हूं। कुरु कुरु कनिष्टभ्यां नापूर स्वाहाः करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फल। ओम नमो दह- वाय कामाख्याये सिर से स्वाहाः सर्व सिद्धि दायें सिखायै वषट अमुक कर्म कवचाहूं कुरु कुरु नेत्र त्रयाय वोषट स्वाहाय अस्त्रा पट।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यानम्

योनियाता शरीर राय कुगुबा सनी मनी द्यामदा रजस्वलो महातेजा कामक्षीच्चे सदा ।

विधि

उपरोक्त मन्त्र हृदय में ध्यान रखकर एकाग्रचित हजार बार जप करें सिद्धि हो जाय काम में लावे ।

हाजराती मंत्र

जिस मनुष्य पर हाजरत करना हो उसके यहाँ प्रथम एक हजार बार उपरोक्त मन्त्र गुडहल के फूलों को अभिमन्त्रित कर आहुति दे । उस आहुति की राख में मेंठकी राख मिलाकर रुई की सात बत्ती बनावे और तेल के दीपक में बत्ती को रखकर रपटले फिर शुद्ध वंश वाले बालक को जिसकी आयु दस साल की हो स्नानादि से शुद्ध करके बैठावे और आप भी शुद्ध होकर कुशासन पर बैठे और उत्तर की ओर हनुमान की मूर्ति स्थापना कर गुडहल के फूलों पर उपरोक्त मन्त्र द्वारा पानी छोड़े और फिर इस मन्त्र को भोजपत्र पर अनार की कलम से सहदेई के रस की स्याही बनाकर लिखे और विधिवत उसकी पूजा कर बालक को दिखावे और गुडहल की राख तेल में सानकर उसकी हथेली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर मले। इस भांति करने से भूत ग्रसित रोगी रोग से मुक्त हो जायेगा।

जिन्नता साहिबा

इस्लाम मत वाले भूतात्माओं को जिन या आसेव के नाम से पुकारते हैं। बहुत से इस्लाम मत के अनुयाइयों से सुना है कि जिन्नों की महफिल भी लगती है। नाना प्रकार के नाच रंग होते हैं। अनेक आतमायें उस जश्न में शामिल होती हैं। यहां तक विवाह आदि संस्कार होते हुए सुने हैं। उनका कहना है कि जिन्नों में पहले बहिश्ती आता है। छिड़काव करता है, फर्श बिछाता है। नाना प्रकार की सुगन्धों का छिड़काब होता है। फिर स्त्रियां आकर नृत्य करती हैं। बाजा बजता है, यही नाच रंग सवेरे तक होता है। जिस समय पंक्षी चीखने लगते हैं सब गायब हो जाते हैं। ऐसे करिश्मे केवल बट वृक्ष पीपल गूलर के नीचे चांदनी रात में दिखाई देते हैं। उनका कहना है कि जिन्नत रात के बारह बजे से अपना काम शुरु करते हैं और प्रातःकाल समाप्त कर देते हैं।

किसी किसी को जबानी ऐसा भी सुनने में आता है कि जिन्न रात को हलवाइयों की दुकान पर मिठाई लेने आते हैं और माल की कीमत में कंकड़ पत्थर कोयले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसी वस्तुयें दे जाते हैं जो प्रातःकाल रुपयों की शक्ल में हो जाते हैं सुनने में आया है कि फलाँ हलवाई जिन्नों की बदोलत ही मालदार हो गया है ऐसी अनेकों कहावतें सुनने में आती है। जिस प्रकार हिन्दुओं यन्त्र मंत्र तन्त्र भूतों के उतार इत्यादि मत वालों में भी 'इस्मे आजम' 'हाजरात' 'बावीफा' इत्यादि जिन्नों को हटाने के लिए लिखे हैं।

इस्मेआजम क्रिया किस प्रकार की जाती है

जिस मनुष्य पर जिन्नात का खलल होता है उस पर 'ईस्मेआजम को इस प्रकार किया जाता है कि काँसे की थाली में पानी भरके उसमें रोगी को बैठावे और 'बिस्मल्लाह' पढ़कर उस पानी को ७ बार फूंके फिर चाकू से पानी को फाड़कर रोगी को पिला दे जिन्न का असर उस पर से उतर जावेगा।

इस्मेआजम की दूसरी क्रिया

कांसे की थाली में रात के समय पानी भर कर रख दो, पानी भरने से पहले थाली में बिस्मल्लाह अल्लाअलरहमान, अलारही लिख दो थाली को लेकर मकान के बीच सहन में रक्खों और उसके पास घी का चिराग कुछ ऊँचाई पर रक्खो ताकि चिराग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की लौ पानी में दिखाई दे फिर रोगी को लाकर थाली के पास बैठाओ और उससे कहो कि बिना पलक लगाये एक टक नजर से पानी को देखे। थोड़ी देर में रोगी को परछाई पानी में दिखाई देगी फिर उससे कहो कि पानी में तुम्हें कुछ दिखाई दिया है या नहीं। जब रोगी कहे हां दीखता है तो फौरन थाली को रोगी के सामने से हटालो और उससे कहो कि जिन्न जिस पानी में आ गया है। इतना कहकर चाकू से उस पानी को बार २ फाड़ो फाड़ते वक्त अल्लाह का नाम लेते जाओ जब पानी सात बार फूक कर रोगी से कहो जिन्न को काट डाला है। अब इसे फेंक दो। इतना कहकर पानी को मकान के दरवाजे से बाहर फेंक दो। रोगी अच्छा हो जावेगा। यह प्रयोग केवल जुम्मा (शुक्र) या जुमेरात (बृहस्पति) को किया जाता है।

भूतों की खोर देखना

भूत क्रिया का वर्णन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र तांत्रिक पुस्तकों में अधिक पाया जाता है। प्रायः इन पुस्तकों को घनिष्ठ सम्बन्ध का स्वतन्त्र, काली कवच तथा भैरव तन्त्र से अधिक है। इन्हीं तन्त्रों के अनुसार भूत आदि को खोर देखा करते हैं इस्लाम मत वाले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बजीफा पढ़ा करते हैं। खोर देखने के कई साधन हैं जिनमें से कुछेक का वर्णन यहाँ पर करते हैं। ओझा विद्या के कई ज्ञाता मार्जन द्वारा भी भूतादि उतारा करते हैं।

खोर देखना

जिस प्रकार वैद्य रोगी के रोग का निदान नाड़ी द्वारा करता है। उसी प्रकार भूत विद्या के ज्ञानी स्याने भूत का निदान खोर द्वारा करते हैं। खोर देखने की बहुत सी रीतियां हैं। कोई तम्बाकू द्वारा देखता है, तो कोई घड़े पर तथा कोई कच्चे सूत के धागे पर देखा करता है।

तम्बाकू से खोर देखना

प्राय देखने में आया है कि भूतादि रोग के ग्रस्त रोगी पर सात या पांच वार तम्बाकू उतार कर स्याने को दे आते हैं वह उस तम्बाकू को चिलम में रखकर पीता है। जिस दम स्याना तम्बाकू का दम लगाता है। उसमय वह अपने इष्ट देव का ध्यान अपने मन में करता है। पश्चात् रोगी के मृतक सम्बन्धियों का नाम लेता जाता है इसी क्रमानुसार जिस मृतक के नामोच्चारण करते समय चिलम में धुआं और आग की लौ ऊपर को उठ आती है। उस रोगी पर उसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खोर का निदान कर लिया जाता है। फिर उसका उपचार करते हैं।

घड़े पर खोर देखना

कुम्हार के यहां कच्चा घड़ा रात्रि के नौ दस बजे जब सब सो जावें तब घड़े द्वारा खोर देखने का प्रयोग किया जाता है। कुम्हार के यहां से आये हुए कच्चे घड़े को चौका लगाकर बीच में रखते हैं। स्याना अर्थात् निदान करने वाला उत्तर की ओर मुँह करके बैठता है घड़े के चारों ओर तिल और जौ रखकर एक चिराग कड़वे तेल का जलाकर रखते हैं। फिर स्याना रोगी के घर वाले किसी मनुष्य को अपने सामने बिठा कर और घड़े को औंधा कर उसकी घाघरी को स्याना और रोगी के घर वाला हाथ की गाई से उठाकर चिराग की लौ के ऊपर ले जाते हैं। इतनी क्रिया के पश्चात् स्याना रोगी के घर वाले मनुष्य से कहता है कि तुम्हारे घर के जितने मनुष्य मर गये हैं उनका नाम क्रमानुसार लेते जाओ जिसकी खोर होगी उसी के नाम पर घड़ा हिलने लगेगा। निदान रोगी के घर वाला इसी प्रकार क्रम से सबका नाम लेता जाता है और स्याना निम्नलिखित मंत्र पढ़ता जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्र

ओंम दद्दुर्गायनमः ओम अमुखायमः हैं हनुमंता नमः ।

घर के मृतक मनुष्य के नाम लेवाद घड़ा न हिले तो रोगी के अड़ौसियों पड़ौसियों के मृतक स्त्री पुरुषों के नामोच्चारण करता है। इस प्रकार जिस मृतक आत्मा के नाम घड़ा हिलने लगता है उसी का खोर समझ लाती है कोई २ स्याना प्रथम ग्राम के चारों ओर वाले भुमैया, सैयद, जिन्न भूतादिकों के नाम लिवाता है। फिर उसका उपचार करता है। इस सूरत से यदि घड़ा न हिले तो फिर क्रियाओं का उपयोग किया जाता है। तात्पर्य यह है कि जिस क्रिया से भूतादि रोग की खोर का निदान हो वही क्रिया करते हैं।

तराजू द्वारा खोर देखना

जिस प्रकार घड़े पर खोर देखी जाती है। उसी प्रकार कोई कोई स्याना तराजू पर भी खोर देखता है। तराजू पर खोर देखने की क्रिया सबसे प्राचीन है। क्रिया भी रात्रि के समय में ही की जाती है। स्याना जिस समय तराजू पर खोर देखने की क्रिया में संलग्न होता है। उसी समय रोगी को अपने सामने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिठाकर उससे कहते हैं कि हम भूत को यहां बुलाते हैं इतना कहकर रोगी के सामने तराजू को उसका पोटा पकड़ कर उठाता है। और रोगी से कहता है अपने मृतक पुरुषों का नाम लेता जाय जिसके नामोच्चारण के साथ तराजू हिलने लगे उसकी खोर जानना चाहिए। रोगी स्याने के कथनानुसार नाम लेता है जिसके नाम पर तराजू हिलने लगती है उसकी मृतक आत्मा की खोर जानी जाती है कोई स्याना इस प्रकार की खोर देखता है तराजू दीपक की लौ को स्पर्श करने लगे अथवा दीपक को लौ से छुने लगे उसी को खोर समझी जाती है।

मंत्र विद्या

भैरव की चौकी का वर्णन

ओं नमो काला भैरव काली रात, काला आधा आधी रात चले कतार बांधि तू बावन वीर, परनारीसों राखे सोर छाती। धरिके बाको लावे, सोती होय जगाय के लावे। बैठी होय उठाके ॥ शब्द ॥

रविवार सहित होली और दिवाली की रात को लाल एरंड एक झटके में बांये हाथ से उखाड़ लावे ताको काजल करे और इसी मन्त्र से २१ बार मन्त्र को पढ़े जिसके लगावे सो अपना होके रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रेत या चुड़ैल निवारण मन्त्र

ओं ह्रीं क्लीं कंकाल कपिटनी कुटुम्बरी आरम्बरी हुंकार बकारः धः धः !

विधि

नीम की पत्ती की धूनी देकर इतवार मंगल को इस मन्त्र को झाड़े बाधा शान्त हो ।

टोना निवारण मन्त्र

ओम का कलंक कपाट बज्र प्रहार कलंक पलका फलक फलाक यती की वाचा सत्य हूं ।

विधि

कपड़े का फलीता लगाकर अलसी के तेल में भिगो कर जमावे । कांसी की थाली में जल भर कर पलीता में तेल टपकावे इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर बालक के मारे । टौना जाय ।

गर्भ धारण मन्त्र

ओं ह्रीं जललां जलं ठः ठः २ ओं ह्रीं ।

विधि

रितु काल के पीछे शुद्ध हुई स्त्री को मिट्टी से पृथ्वी लीप कर उस पर बैठावे । मृगसिरा नक्षत्र में मारे हुए काले मृग के चर्म पर शुद्ध होकर पुरुष बैठे । रात्रि के काल में १०१ बार मंत्र पढ़े गर्भ स्थित हो । सवा सेर का रोट बन्दरों को खिलावे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गर्भ रक्षा मन्त्र

ओं रुद्रा भी स्वाहा हाँ हाः हः क्लों ।

विधि

इतवार या मंगलवार को सायंकाल गूगल की धूप-देकर गर्भ वती स्त्री के समीप एक सौ इक्कीस बार इस मन्त्र को पढ़े तो किसी प्रकार की बाधा न हो ।

दृष्टि बांधने का मन्त्र

रविवार अमावस्या की रात को शमशान में जाकर अर्ध रात्री को निम्नलिखित मन्त्र को एक हजार बारकर सिद्धि करे और अंकल की कली का चौमुखा दीपक जला कर रखे तो दृष्टि बंध जाय । जो चाहोगे वही लोगों को दिखाई पड़ेगा ।

मन्त्र

ओ३म् नमो भगवते वासुको नाम राजाय ।
नाम राजाय कुण्डली दृष्टि बन्धन स्वाहा ।।

सांप कीलने का मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को शमशान भूमि में शिव रात्रि को जप कर सिद्ध करे । फिर किसी सांप को चलता हुआ देखकर कंकरी से इसी मन्त्र से सात बार अभि-मन्त्रित करके सांप पर मारे तो सांप का चलना बन्द हो जाय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओम नमो भगवते लक्ष्मणाय शेषनागाय बरी बजरी आस कोलूं पीस कोलं मेरा कभी न छूटे गुरु गोरख नाथ शक्ति अपार ।

शिशु रोदन निवारण मन्त्र

ओम विद्य दव दहनाय रफो रफोंक्रा क्रा ह्री श्रों ।

सूर्योदय के पहले पवित्र स्थान में कोरी ग्यारह सींक ले आवे तथा मं ल को मन्त्र पढ़कर उन्हीं सींकों से झगड़ा देवे बालक का रोना बन्द हो जावेगा ।

मूठी निवारण मन्त्र

ओम ह्री आई को लंगाई को जट खट खट उल्टा लूका को सूका को नार मार सिद्धि यति की दोहाई मन्त्र सांचा फुरो वाचः ।

सर्वोपरि मन्त्र

ओं परब्रह्म परमात्मने नम, । उत्पत्ति स्थिति प्रलय कराय ब्रह्म हरि हराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतु-कानि दर्शय दर्शय । दास ते यायनम' । मंत्र सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि

प्रथम किसी पर्व में अथवा दीप मालिका से आरम्भ कर उसका एक लक्ष्य जप और हवन आदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके सिद्ध कर लेवे । पीछे किसी भी कार्य के आरम्भ में अष्टोत्तर जपने से वह कार्य निश्चय होता है ::

नजर दूर करने का मन्त्र

ओं नमो सत्यनाम आदेश गुरु का ओं नजर जहां पर पीर नजर जहां पर पीर न जावी बोले छलसो अमृत बानीं । कहे नजर कहां से आई यहां की ठौर ताहि कौन बताई । कौन जाति तेरी कहां ठाम ।कस की बेटी कहां तेरा नाम । कहां से उड़ी कहां को जाई, अब ही बस करले तेरी माया । तेरी जात सुनो चित-लाय जैसी होय सुनाऊं आय । तेलिन, तमोलिन, चूड़ी चमारी, कायस्थनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानीराजा कीरानीं । जाको दोष ताहि के सिर पड़े जहार पीर नजर सों रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति पुरो मन्त्र वाच ।

विधि

मोर पंख से बालक के सिर से पैर तक झाड़ा दे और मन्त्र पढ़ता रहे ।

पशु हितकारी मन्त्र

ओं नमो बेली देहली बाँधि दहलाय राम सारी सबकी पशु स्वस्थ हो जाय ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि

गोशाला के द्वार पर बैठकर प्रतिदिन मन्त्र पढ़े। तो पशु स्वस्थ हो जाय।

यक्षणी साधन

यक्षिणियों के नाम

१–महा यक्षिणी २–सुन्दरी ३–मन महरी ४–कनकवती ५–कामेश्वरी ६–रति प्रिया ७–पदमिनी ८–नटी ९–अनुरागिनी १०–विशाला ११–चन्द्रिका १२–लक्ष्मी १३–शोभनी १४–मदनी

पात्र विचार

इस विद्या का अधिकारी वही है जो गुरु का भक्त और भगवान शंकर का एक निष्ठ भक्त हो तथा जिसका मन चंचल हो वही इन मन्त्रों का अधिकारी हो सकता है। जिनके हृदय में विश्वास नहीं है उसे यह मन्त्र कभी सिद्ध नहीं हो सकते। इन मन्त्रों में विश्वास करना परम आवश्यक है।

साधना का समय व स्थान

आषाढ़ पूर्णिमा के दिन और आदि क्रिया करके शुक्र के उदय में मनुष्य याक्षिणी का साधन करे।

श्रावण मास में कृष्ण प्रतिपदा से लेकर चन्द्रमा बलि हो तब प्रारम्भ करके एक मास भर के प्रयोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को विहन रति साधन करे, अर्थात विघ्न न होने पाये ।

निर्जक स्थान में विल्व पत्रवृक्ष को जड़ पर श्री शिवजी का पूजन षोडशोपचार रुद्र पाठ सहित करे और 'त्रयम्बक यज्ञामहे० इत्यादि पांच हजार जपे । वहां ही प्रतिदिन कुबेर जी की भी पूजा करे, कुबेरजी के अराधन का मन्त्र ये है–

यक्षराज नवस्तुभ्यं शंकर प्रिय बान्धव ।
एक में बशगां नित्यं दक्षिणी कुरुते नमः ।।

अर्थात–हे यक्षराज तुमको नमस्कार, हे शंकर के प्यारे भाई एक यक्षिणी नित्य हमारे वश में करो । तुमको बारम्बार नमस्कार है । कुबेर की पूजा हो जाने पर उपरोक्त कुबेर मन्त्र को १०८ बार जपे । ब्रह्मचर्य से रहे । मौन धारण करे । खीर आदि का भोजन दिन में ही करे । रात्रि में कुछ न खाय ।

२–अहृष्टकण यक्षिणी मन्त्र

ओं नमः अदृष्ट यक्षिणी स्वाहा',

विधि

कृष्णपक्ष को अमावस से लेकर पूरे एक मास तक इस मन्त्र का तीन सहस्त्र जप प्रतिदिन करे और २४०० मन्त्र से घी का हवन अन्तिम दिन करे । हवन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए लकड़ी नीम की होनी चाहिए। हवन की राख अपने माथे पर लगाये तो अनष्ट होवे। यानि आप तो सबको देखे मगर उसको कोई न देख सके। जब मस्तक से राख उतार देवे फिर वैसे ही हो जावे जैसे कि पहले था।

४—भोग यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं नमो आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।

विधि

स्नानादि से पवित्र होकर स्वच्छ वस्त्र पहनकर श्रावन मास की छठी तिथि से आरम्भ करके इस मंत्र का आठ हजार बार जप, प्रतिदिन एक सहस्त्र करे। जप के अन्त में ज' सहस्त्र मन्त्र का घी से हवन करे और सहस्त्र मन्त्र तर्पन करे जब तक यह क्रिया चालू रहे जमीन पर सोवे, झूठ से परहेज रखे। दुग्ध व चावल खावे सम्पूर्ण होने पर देवी दर्शन देवे, जिससे दर्शन करने से आराम हो कष्ट दूर होकर बहुत धन प्राप्त हो।

५—अन्य मन्त्र

ओं ह्रीं ह्रीं नम' ॥ ५ ॥

विधि

इस मन्त्र का जप बीस सहस्त्र प्रतिदिन तीस दिन तक करे और अन्तिम दिन गोदुग्ध की खीर पका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर दो सहस्त्र से हवन करे और सहस्त्र मन्त्र से तर्पण करे। भूमि पर सोवे और खीर का ही भोजन करे तो देवी प्रसन्न हो और बहुत सा धन देवे और भूत इत्यादि उसके वश में रहे।

धनदायनी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओ ह्नां ह्नी ह्नी हूँ हों ह्न स्वं ॥ ६ ॥

विधि

इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करे और ११५०० मन्त्र घी और खीर का हवन करे। तो धन दायिनी यक्षिणी वंश में होवे। यह जप सोम-बार से आरम्भ करना चाहिए और पाँच सहस्त्र जप प्रतिदिन करना चाहिये।

७—शकशानांक यक्षिणी मन्त्र

ओं क्लीं भगवतिभ्यो नमः ॥ ७ ॥

८—अन्य मन्त्र

ओं ह्रीं ह्रीं स्फूं शाने शाम वास्नी शमशाने स्वाहा ॥ ८ ॥

विधि

शमशान में जाकर नंगा होकर इस मन्त्र का पचास हजार जप करने से शमशानांक यक्षिणी प्रसन्न प्रसन्न होकर वस्त्र प्रदान करती है। बस उस वस्त्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को पहन कर उपरोक्त मंत्र (नं० ७) का पचास हजार जप करे और तीन बर्तन मदिरा से भरकर अपने पास रक्खे और भोजन भी मदिरा के साथ किया करे जप समाप्त होने पर यक्षिणी जो फल मांगेगा दे देगी साधन अपवित्र है। अतः इसके करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। चूंकि इस साधना में मदिरा का इस्तेमाल है अत' इसका न करना ही अच्छा है।

९–भोग यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं जगत्रय मातृ पद्मनिधे स्वाहा ॥ ९ ॥

विधि

इस मन्त्र का २५ हजार जप करने के पश्चात् ढाई हजार मन्त्र से विविध मेवों का हवन करे तो यक्षिणी सिद्ध होवे।

विद्या यक्षिणी साधन मन्त्र

ओ त्र्यी वेद मातृभ्यः स्वाहा ॥१०

इस विधि मन्त्र नं ११ के अनुसार है।

११–अष्ट महासिद्धि यक्षिणी मन्त्र

ओं अष्ट महा यक्षिणी नम' स्वाहा ॥११॥

विधि

इस मन्त्र का बारह लाख बार जप करने के बाद एक लाख लाख हजार मन्त्रों से पांच मेवों का हवन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे तो अष्टमाह यक्षिणी वश में हो जावे । यह साधन शुक्ला पक्ष की पाँचवी तिति से आरम्भ करना चाहिये ।

सिद्धि यक्षिणी मन्त्र

ओं नाना चरण पद्मावति स्वाहा

विधि

इस मन्त्र का दस लाख जप करना चाहिए और घी गूगल सेवबी के फूलों को मिश्रण करके १ लाख मन्त्र से हवन करना चाहिए । जप के समय एक मिट्टी का बर्तन उर्द व चावल से भर कर सम्मुख रख लेवे तो यक्षिणी सिद्ध होकर सब तरह की मनोकामना पूर्ण करती है । यह साधन रेवती नक्षत्र में आरम्भ करना चाहिये और पांच हजार जप करना चाहिए ।

२३–शत्रु नाशक यक्षिणी सिद्धि मन्त्र

ओं नमो सिद्धि विनायकाय सर्वकार करते विघ्न अनुनाय सर्वगज वशीकरनाय सजन स्त्रिपुर्षा कर्षणाय श्री ओं स्वाहा ।।१३।।

विधि

उपरोक्त मंत्र दस हजार जप सोमवार से आरम्भ करके २२ दिन करने से यक्षिणी वश में होवे और साधक इच्छानुसार उसके शत्रु का नाश करें ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२४-वशीकरण यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं नमो सर्वास्त्रि पुर्ष वशीकरणी श्री हीस्वाहा ।।२४।।

विधि

इस मन्त्र का ७ हजार जप मंगल से आरम्भ करके, ७२ दिन में समाप्त करे और सात हजार दोसौ मन्त्र से नारियल का हवन करे तो यक्षिणी सिद्ध होवे। उस हवनकी राख अपने मस्तक पर लगाकर जिसके सामने जाय वही वश में होवे।

फलदायनी यक्षणी साधन मन्त्र

२५

ओंश्री काक कमल बर्वने सर्व कार्य सर्वास्थावदेहि देहि सर्व कार्य करु परिश्चर्य। सर्व सिद्धि पादकायांहक्ष द्वादशान दायने प्रदाय स्वाहा ।।१५।।

विधि

जितने संसार में फल व फूल हैं यह यक्षिजि सिद्ध होने पर लाकर देती हैं। यदि कहीं कुछ चमत्कार दिखाना होतो उसे कह जेवे कि तुम्हें कौन सा फूल या फल चाहिये। बस वह किसी का नाम लेवे उसी समय यक्षिणी को आज्ञा देवे। फौरन लाकर देवे। उसको वश में इसी तरह किया जाता है। कि इसके मन्त्र का एकलाखजप करने के बाद दस हजार मन्त्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से चनों का हवन करेतो यक्षिणी वश में होवे । प्रतिदिन एक मन्त्र जपना चाहिए ।

सर्व वशीकरण साधन मन्त्र

ओं सिद्धि रक्त चामुण्डे घुरं घुरं अमुकी वशमान्य स्वाहा ।१६।

एक लाख जप करने के बाद विधि यदि कन्नेर के पत्तों से किया जावे तो राजा प्रसन्न हो और वश में हो । यदि जुही के पत्तों के साथ हवन किया जावे तो स्त्री प्रसन्न हो और उसके यहां पुत्र हो । यह साधन मन्त्र न० १५ के अनुसार करना चाहिए ।

१७–मोहिनी यक्षिणी साधनी

ओं नमो गिपले चपले नाना पशु मोहिनी स्वाहा ।७।

सवा साल तक प्रतिदिन सायंकल के समय एक हजार मंत्र का जप करे । उस समय सुपारी, नारियल और केसर इत्यादि सामग्री इत्यादि पास रखे और गुगल की धूप लेकर प्रार्थना करे तो मोहिनी यक्षिणी हो यह साधन मघा नक्षत्र से आरम्भ करना चाहिए ।

१८–महेन्द्र यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं महेन्द्र कुलदुल स्वाहा ।१८।

एक साल तक महेन्द्र यक्षिणी देवे उस समय से आरम्भ करके इस मन्त्र का एक लाख जप निरगुण्डी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के वृक्ष के नीचे बैठकर करना चाहिए। जप के समाप्त होने पर दस हजार मन्त्र के जप और पाँच मेवों से हवन करना चाहिए। इससे महेन्द्र खुश होती है और पाताल से नाना प्रकार के पदार्थ लाकर देती है।

१६–शंखनी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं शंख धरणी शंख धरने ह्रीं ह्रींली क्लीश्री स्वाहा। १६।

विधि

बड़ के पेड़ के नीचे बैठकर दस हजार जप सूर्योदय से पहले समाप्त करे और उसी स्थान पर घी लेकर एक हजार मन्त्र से हवन करे यक्षिणी सिद्धि होवे जो पदार्थ माँगे फौरन देवे।

२०–चन्द्रिका यक्षिणी साधन

ओं चन्द्रके स्वाहा।२०।

विधि

उपरोक्त विधि से ही इस मंत्र का जप और हवन करने से चन्द्रिका यक्षिणी प्रसन्न होकर अमृत प्रदान करती है परन्तु यह उस व्यक्ति को मिलता है जो हर तरह से पवित्र हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२०–मेदना मेखला यक्षिणी मन्त्र

ओं मदन मेखले नमः स्वाहा ।२०।

विधि

महुए के वृक्ष के नीचे बैठकर चौदह दिन में पूरा एक लाख इस मन्त्र का जप करे तो मदन मेखला एक सुरमा प्रदान करता है। जो मनुष्य इस सुरमे को लगावे वह सबको देखे और आप किसी को दिखाई न दे। यदि वह अंधेरे, में चला जाए तो वहाँ भी उसको प्रत्येक वस्तु दिखाई देवे।

२२–विकला यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं विकले ऐ ह्रीं क्ली श्री स्वाहा। २२।

विधि

तीन महीने तक अपने घर में बैठकर इस मन्त्र का एक लाख जप करे और समाप्त होने पर पचास हजार मन्त्रों से कन्नेर के पुष्पों में घी मिलाकर हवन करने से विकला दर्शन देती है और सब प्रकार की मनोकामना पूर्ण करती है।

२३–लक्ष्मी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं लक्ष्मी व श्री कमला वारणी स्वाहा ।२३।

विधि

इस मन्त्र को अपने घर में बैठकर एक लाख बार जपे और उल्लू के पंख की धूप जलावे। तत्पश्चात्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दस हजार मन्त्रों से कनेर के पत्तों व घी को एक जीव करके हवन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रसायन देती है तथा ऐश्वर्य को देती है। रसायन से साधक जितना सोना चाहे बना सकता है।

२४—माननी यक्षिणी साधन

ओं ऐ माननी ह्रीं ऐ ह्रीं त्रिसुन्दरी हंस हंस स्वाहा। ३४।

विधि

ब्रह्म मुहूर्त में किसी चौरास्ते में बैठकर इस मन्त्र का एक लाख जप करे और गुलाब के पुष्प व घी मिलाकर दस हजार मन्त्र से हवन करे माननी यक्षिणी सिद्ध होकर दिव्य खांडा देती है जिसके द्वारा राज्य मिलता है। यदि दस हजार मन्त्र से केवल घृत का हवन करे तो एक शस्त्र की प्राप्ति हो।

२५—सलोचना यक्षिणी साधन

ओं क्लें सलोचना ह्रि देवी स्वाहा। २५।

विधि

सायंकाल किसी नदी के तट पर जाकर तीन मास में तीन लाख जप समाप्त करे और बाद में एक लाख मन्त्र से घृत का हवन करे तो सलोचना यक्षिणी प्रसन्न होकर खड़ावें दे जिनके ऊपर पैर रखकर साधक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हजार कोस की यात्रा मिनटों में ही कर सकता है। और किसी प्रकार की थकान प्रतीत नहीं होती चाहे कैसी भी कठिन जगह हो फौरन वहां पहुँच सकता है। यह साधन भी बैसाख मास में स्वांति नक्षत्र में आरम्भ करना चाहिए।

२६–विलासनी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्लीं दुरजाक्षनी विलासनी आगच्छी गच्छ ह्लीं प्रिय में भव क्ले स्वाहा ॥ २६ ॥

विधि

किसी नदी के तट पर बैठकर इस मन्त्र का पचास हजार जप करे बाद में घृत तथा गूगल को मिला इस मन्त्र का दस हजार आहुति से हवन करे सो यक्षिणी वश में हो।

२७–सुरसुन्दरी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्री आगच्छा गच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा ।२७।

इस मन्त्र के साधक के लिए आवश्यक है कि दिन में तीन बार विधि पूर्वक संध्या किया करे और प्रत्येक के साथ एक २ हजार मन्त्र का जप, प्रतिदिन तीन मास तक करे और श्री महादेव की मूर्ति के पास बैठ गूगल तथा घृत का पन्द्रह हजार मन्त्र के हवन करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह साधन तीन मास तक करने से यक्षिणी प्रकट होकर दर्शन देवे। उसी समय नमस्कार करे और हाथ जोड़कर निवेदन करे।

देवी दारिद्रय दुगघोसिम तन्स नाशय सत्वरं।

अर्थ–मुझे दारिद्रय ने बहुत दुखी किया हुआ है और आलस्य ने घेर लिया तू मुझे शक्ति दे और इसका नाश कर दे।

२८–नटी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्री नटी महानटी स्वरूपवति स्वाहा।२८।

कार्तिक की पूर्णिमा को शीशमके पेड़ के नीचे जाकर उस विधि से करे कि एक सुन्दर मन्डल चंदन का तैयार करे और एक मूर्ति नटी यक्षिणी बनाकर उसमें बिठावे और धूप दीप इत्यादि से पूजन करे और इस मूर्ति के सामने बैठकर एक मास तक प्रतिदिन एक हजार इस मन्त्र का जाप करे और रात को इसी तरह पूजा करे बाद में खाना खाए। और आधी को उठकर जापकिया करे तो यक्षिणी खुश होकर एक रस व सुरमा देती है। यह सुरमा हर एक रोग को दूर करता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२६ कामेश्वरी वशीकरण साधन मंत्र

ओं ह्री आगच्छा गच्छ कामेश्वरी स्वाहा ।२६।

विधि

प्रातःकालशुद्ध आसन पर बैठकर एक हजारजप प्रति दिनतीन मास तक करे और प्रतिदिन रात्री को भी ऐसे ही करे बाद में धूपदीप पुष्प इत्यादि सामग्री से पूजन करे तो कामेश्वरी यक्षिणी सिद्ध हो और रसायन देवे। यह साधन भी कार्तिक की पूर्णिमा को किया जाता है।

३०–स्वर्ण रेखा यक्षिणी महा मंत्र

ओं वरकर शालम्ले स्वर्णरेखा स्वाह ओं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्यः स्वाहा ।३०।

सायंकाल को महादेवकी मूर्ति को सामने रखकर कुछ समय तक पूजन करे बाद में भोजन करे। ऐसे छः मास तक करना चाहिए इस प्रकार यक्षिणी खुश होकर दर्शन देती है और फिर जो चाहो मिल जाता है

३१–सुलक्षणा यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्रीं प्रमोदय स्वाहा ।३१।

विधि

रात्रि के समय इस मन्त्र का जप तीन माह तक प्रतिदिन करे तो यक्षिणी सिद्ध होवे। साधन चाहे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किसी तिथि से आरम्भ किया जावे। इसमें कोई हानि नहीं है।

३०–अनुरागिनी यक्षिणी साधक मन्त्र

ओं ह्रीं अनुरागिनी मैथुन प्रिये स्वाहा।३०।

विधि

लाल रंग के वस्त्र पर अनुरागिनी यक्षिणी की सफेद रंग की मूर्ति बनायें। मूर्ति इस तरह की होनी चाहिए कि एक-एक हाथ में कमल हो सब आभूषणों से युक्त अर्थात् वस्त्रालंकार धारण किए हुए हों फिर इस मूर्ति की पुष्प धूप से करनी चाहिए। और एक हजार जप प्रति दिन एक मास तक करना चाहिए। जब साधन पूरा हो जायेगा तो यक्षिणी आयेगी और आधी रात को दर्शन देकर साधक की मनोकामना पूरी करती है। और उसको २५ सुवर्ण मुद्रा देगी साधक को चाहिए कि इन मुद्राओं को किसी अच्छे काम में खर्च कर देवे। वरन फिर कुछ नहीं मिलेगा।

३३–नखकेशी यक्षिणी साधक मन्त्र

ओं ह्रीं नख केशो कनक पवि स्वाहा।३३।

विधि

उपरोक्त अनुरागिनी यक्षिणी के समान है और साधक बहुत जल्द सफल हो सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३४–महा यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्रीं महा यक्षिणी भामिनी प्रिये स्वाहा ।३४।

विधि

इसका साधन या रविवार को या सोमवार को आरम्भ करना चाहिए और पहले तीन दिन तक व्रत रखना चाहिए और धूप दीप पुष्प इत्यादि से देवी की पूजा करनी चाहिए । और चन्द्र ग्रहण के आरम्भ से लेकर अन्त तक यानि जब तक ग्रहण लगा रहे । मंत्र का जप करने से महा यक्षिणी वश में होती है ।

३५–पद्मिनी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्रीं पद्मनी स्वाहा ।३५।

विधि

प्रातःकाल स्नान करके पहिले एक मण्डल चन्दन का डेढ़ फुट वर्ग का तैयार करके उसमें पद्मनी यक्षिणी की मूर्ति, स्त्री के आकार की बनाकर उसका ध्यान व पूजन करे और सोमवार से आरम्भ करके एक हजार एक, मास तक जप करने से यक्षिणी वश में होकर रसायन देती है ।

३६–चित्रणी यक्षिणी मन्त्र

ओं ह्रीं क्लीं चित्रणी स्वाहा ।३६।

आम के पेड़ नीचे बैठकर तीन मास तक एक हजार प्रतिदिन इस मन्त्र का जप करना चाहिए और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्तिम दिन किसी फल से दस हजार मंत्र से हवन करके यक्षिणी वश में होकर एक सुरमा प्रदान करती है जिसको साधक यदि पूर्णमा को अपने नेत्र से लगाए तो उसे खजाना दिखाई देवे।

३७–मनोहरा यक्षिणी मन्त्र

ओं ह्रीं मनोहर स्वाहा ।३६।

विधि

उपरोक्त मंत्र का जप किसी नदी के किनारे बैठकर सात दिन तक दस हजार समाप्य करे और अन्तिम दिवस को दस हजार मन्त्र से ही हवन करे तो यक्षिणी प्रसन्न होकर बहुत साधन देवे। जमा करने का विचार तक भी न रहे।

इस मंत्र का जाप आरम्भ करने से पहले निम्नलिखित श्लोक को पढ़कर ध्यान करना चाहिए और इस मन्त्र का जाप उस समय करना चाहिए जबकि चन्द्रमा मकर राशि में राशि मे होवे।

श्लोक

कुरंग.नेत्रा शर बिंदु बक्ता बिबा परां चन्दन गंध माल्यां-चीन्यां शुक्री धनि कुचांमनोज्ञां श्यामां सदा करि वचित्रां।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थ-हे मृगनयनी शरद ऋतु के चन्द्र के समान साफ रंग वाली सुन्दर स्वरूप वाली, लाल होठें वाली सीधी नाक वाली और सुन्दर वस्त्र आभूषणों वाली, ऐसी जो देवी है उसका मैं ध्यान करता हूं।

३८-कालका देवी यक्षिणी साधन मंत्र

ओं कालका देवी स्वाहा।३८।

विधि

गोशाला में जाकर इस मन्त्र को दो लाख जाप करे और हजार मंत्र से घी का हवन करे तो यक्षिणी सिद्ध हो ओर मनोकामना पूर्ण करे। यह साधन मंगलवार को आरम्भ करना चाहिए। एक हजार मंत्र प्रतिदिन जपना चाहिए।

३९-करण पिशाचिनी यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं करण पिशाचिनी पगले लोचने स्वाहा।३९।

विधि

इस मन्त्र का एक लाख जाप कई दिन करने के बाद दस हजार मन्त्र से हवन चाहिए और केवल एक ही समय गुड़ तिल मिलाकर खाने से करण पिशाचनी सिद्ध होकर तीनों काल का हाल जानने की शक्ति प्रदान करती है पाताल का खजाना भी बतला देती है। यह क्रिया गुरुवार से आरम्भ करनी चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४०—नछत्र यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं विचित्रेन चित्र रूपेण सिद्धी कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

पवित्रता से सावधान होकर बड़ के वृक्ष के नीचे बैठ कर इस मन्त्र का एक लाख जप कर शहद घृत व दुग्ध को मिलाकर दस हजार मन्त्र से हवन करे तो यक्षिणी खुश होकर साधक की मनोकामना को पूरा करती है।

४१-अन्य मन्त्र

ओं ऐं ह्रीं महानदे भीष्णे ह्रीं हूँ स्वाहा।

विधि

ऐसे स्थान पर जहाँ कि तीन मार्ग मिलते हों बैठकर इस मन्त्र का एक लाख जप तीन मास में करे और दस हजार मंत्र से घी और गूगल का हवन करे तो यक्षिणी वश में हो।

४२—अन्या मन्त्र

ओं ह्रीं नखकेशीकण्ककति स्वाहा।

विधि

किसी निर्जन स्थान में नंगा होकर बैठे और इक्कीस दिन दस हजार मन्त्र का प्रति दिन जप करे और रात्रि को पूजन करे तो यक्षिणी आधी रात को प्रकट होकर मनोकामना पूरी करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४३--विभ्रमा यक्षिणी मन्त्र

विधि

ओं ह्रीं विभ्रमे रूपे विभ्रमे कुरु कुरु एहि एहि भगवती स्वाहा।

रात के समय श्मशान में जाकर तीन मास तक दो लाख जप समाप्त करे। बाद में बीस हजार मंत्र से घृत का हवन करे। बाद में बीस हजार मंत्र से घृत का हवन करे तो विभ्रता यक्षिणी प्रसन्न होकर ५० मनुष्यों का भोजन प्रतिदिन दिया करे। यह साधन शनिवार को आरम्भ करना चाहिए।

४४--अन्य मंत्र

ओं ह्री जलपानिणि ज्वर हूं लबुं स्वाहा।

विधि

स्नानादि से पवित्र होकर साफ आसन पर बैठकर इस मन्त्र का तेरह लाख जाप तेरह मास में समाप्त करना चाहिए और एक लाख मंत्र से खीर का हवन करे तो यक्षिणी खुश होकर प्रतिदिन एक हजार मनुष्य का भोजन देती है। साधक को जपके दिनों में दुग्ध का भोजन करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४५–अन्य मन्त्र

ओं भूते सलोचनेबु त्यु स्वाहा ।

विधि

इस मन्त्र का ग्यारह लाख जप, ग्यारह मास में करना चाहिए और एक लाख कमल दल का हवन करना चाहिए जब चन्द्र ग्रहण हो तो उस वक्त मालती के पुष्पों से हवन करे और बारह हजार प्रणाम मन्त्र जब सूर्य ग्रहण हो तभी इसी तरह से करें। इसी से यक्षिणी खुश होकर एक हजार मनुष्य का भोजन प्रदान करती है।

वाक यक्षिणी मन्त्र

ओं ह्रीं चा चः स्वाहा ।

विधि

स्नानादि से पवित्र होकर आसन पर बैठकर कुछ दिन तक एक हजार प्रणाम मन्त्र प्रतिदिन जपना चाहिए। इससे वाक यक्षिणी सिद्ध हो जाती है। जो बात पूछो कान में कह देवेगी फिर आप दूसरे लोगों से कह देवे। जो कुछ आप कहेंगे सत्य होगा।

४७–वाक सिद्ध मन्त्र

ओंम नमो लिंगो द्भव रुद्र देहि मे वाचं सिद्धि बिना पर्वगते द्रीं द्रूं द्रैं द्रः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि

बहते हुए जल में खड़ा होकर और अपना बाया-हाथ सिर पर रखकर एक लाख जप करने से वाक सिद्धि होती है। यानि जो बात मुख से निकलती है सत्य होती है। यह जप तीनमास में समाप्त करना चाहिए।

४८–त्यागा यक्षिणी साधना मन्त्र

ओं अहो त्या ी मम त्यागार्थं देणिये वितं बीरसो वित्तं स्वाहा।

विधि

प्रातःकाल स्नान करके गूगल का धूप जलाकर इस मन्त्र का चार लाख जप एक वर्ष में समाप्त करने से त्यागा यक्षिणी खुश होती है और बहुत से पदार्थ लाकर देती है।

४९–वट यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्रीं श्री वट वासिनी यक्ष कुल प्रसूते वट यक्षिणी एहिपाणि स्वाहा।

विधि

इस साधन सोमवार को आरम्भ करे और रात्रि के समय ऐसे स्थान पर कि तीन मार्ग मिलते हों बैठ कर इस मन्त्र का तीन लाख जप करने से वट यक्षिणी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रसन्न होती है और एक सुरमा व कुछ वस्त्रों में से यदि कोई वस्त्र, मनुष्य दुख के समय पहने तो उसका दुख दूर हो जावे और सुरमा यदि किसी गर्भवती स्त्री की आँखों में दो माँस तक डाला जावे तो पुत्र पैदा हो।

५०–बड़ यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं नमो भगवते रुद्राय चन्द्र योनि स्वाहा ।५०।

विधि

रात्रि के समय बड़ के वृक्ष पर चढ़कर छः घण्टे यानी दो पहर तक इस मन्त्र का जप करना चाहिए और प्रतिदिन इतने ही समय तक करना चाहिये। यह जप एक लाख करना चाहिए। प्रतिदिन जप के समाप्त होने पर काजी से मुख धोना चाहिये। इससे यक्षिणी खुश होती है और बहुत से बहुमूल्य पदार्थ प्रदान करती है।

५१–विशाला यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं ह्रीं विशाले ह्रूं ह्रूं क्लीं एहि २ स्वाहा ।५१।

विधि

इस मन्त्र को इमली के वृक्ष के नीचे बैठकर एक हजार प्रतिदिन सत्ताईस दिन तक जपने से विशाल यक्षिणी वश में हो जाती है और एक उत्तम पदार्थ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदान करती है। जो कोई उसको अपने शरीर पर मलता है, सुन्दर हो जाता है।

५२--भन्डार अटल यक्षिणी साधन मन्त्र

ओ नमो उच्चेष्ठे चण्डालिनी शोभिणी दह दह द्रव २ अन्य पूरीश्वरी भास्करी स्वाहा। ५।

साथ ही

ओं नमो ईश्वरी चलब्रह्म ऋद्धि सिद्धि दोनों हमारे हाथ भरी भण्डार वास करो श्री अन्नपूर्णा ज्वालामुखी बोला एक स्वाहा

विधि

इस मन्त्र का दस हजार जप करने के बाद पहले मन्त्र का २२३ बार जप करना चाहिए। यह साधन १५ दिवस शुक्ल पक्ष में और १५ दिवस कृष्ण पक्ष में दो वर्ष तक करना चाहिये फिर केवल एक बार से भण्डार को हाथ लगाने से भण्डार भर जाता है।

५३-अन्य मन्त्र

ओं नमो गुप्त वीर संजान को सबको ता यदि तेरी आन गंगा की लहर जमुना को प्रणाय या कुठार राजा प्रजा लागे हैं पाँच राती ऋद्धि लाओ तो नाथ चौरासी सिद्धि का पात्र भरो हमारा पात्र जो न भरो पारवती का क्षीर खोवा हराम करो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि

अकेला बैठकर उपरोक्त मन्त्र का दस हजार जप दो वर्ष तक करने से भण्डार अटल यक्षिणी प्रसन्न होती है और साधक जो कुछ चाहे कर सकने में समर्थ हो जाता है।

५४-अन्य मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं क्ली वामे मंत्र

विधि

दीपावली की रात्री को यक्षिणी रात्री के आकार की मूर्ति बनाकर ऊपर सिंदूर चढ़ाकर और धूप, दीप पुष्प इत्यादि से पूजन करके उपरोक्त मन्त्र का २१२ बार जप करने से भण्डार अटल हो।

५५-सर्व भखन यकिणी विधि मन्त्र

ओं नमो चमुन्डे द्रचंडे इन्द्राय नमो विप्र चंडाली शोभणि प्रकर्षण अकर्षय द्रव्य मान्य हुं फट स्वाहा।

विधि

आरम्भ में व्रत रखना और क्रोध का त्याग करना, भुमि पर सोना, मोटा भोजन करना फिर किसी निर्जन स्थान में बैठकर इस मंत्र का दस हजार जप करना, यह साधन तीन मास तक करने से अन्तिम दिन रात को भयानक स्वप्न देखे। यदि इस प्रकार का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वप्न न दिखाई दे तो फिर इक्कीस दिन तक यही साधन करे। यक्षिणी प्रकट हो कई प्रकार का भय दिखावे। किन्तु साधक यदि डरे नहीं तो यक्षिणी सिद्ध हो जावे और जो यह माँगे इसको देवे।

महा भय यक्षिणी साधन मन्त्र

ओं महा भय यक्षिणीं साधन मन्त्र स्वाहा।

विधि

मनुष्य के शरीर के अंगों की हड्डियां लेकर उनकी माला बनाओ श्मशान में बैठकर इस मन्त्र का एक लाख जप एक मास तक करो तो महाभय यक्षिणी सिद्ध होकर एक रसायन देती है। जिसको खाने वाले में इतनी शक्ति आ जाती है यदि एक मास में सफलता प्राप्त न हो तो एक मास के लिए फिर साधन आरम्भ कर दो। जिस समय वीर का चूर्ण डाला जायेगा उसका रंग दूध जैसा हो जावेगा दर्शक उसको दूध समझेंगे।

पानी दूध बन जाये

अरण्ड के बीज पीसकर एक बरतन के भीतर लेप करो और सुखा लो। बाद में उसमें पानी भरा जावेगा तो उसका रंग दूध सफेद हो जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जादू के बक्स में कुत्ता बनाना

यह खेल भी आश्चर्यमय खेलों में से एक है । खेल करने वाला दर्शकों को एक बक्स दिखाता है देखलो बक्सा किन्तु स्टेज पर रखते ही वह उसमें से एक कुत्ता निकालकर सब दर्शकों को दिखाता है ।

बक्स खास तौर पर तैयार किया जाता है । यह एक ट्रंक के बराबर लम्बा चौड़ा होता है । यह लकड़ी का बना हुआ ऊपर काला पालिस किया हुआ होता है । इस बक्स के बाजू छपकों और कामनियों से ऐसे लगाये जाते हैं कि बाजू इच्छानुसार खुले और लग जाये ।

यह खेल भी पिछले खेलकी नाई काले परदे वाली स्टेज पर किया जाता है परदे के पीछे खेल करने वाले का सहायक बैठा रहता है बक्स परदे के पास रखकर खेल दिखाया जाता है जब बक्स को लौटाकर और उसके मुंह का ढक्कन खोलकर दर्शकों को खाली दिखाया जाता है तो बक्स का कब्जा और कमानीदार बाजू बक्स की ऊपर की ओर होता है और ज्यों ही बक्स पलटकर फर्श पर सीधा रखा जाता है कि वह कमानीदार बाजू खुल जाता है और परदे के पीछे खेल दिखाने वाले का आदमी छोटा सा कुत्ता निकालकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बक्स में रख देता है तब फौरन खेल दिखाने वाला उस कुत्ते को बक्स में से निकालकर दर्शकों को दिखाता है। इसी प्रकार कुत्ता बक्स में रख करके दिखाया जाता है।

कुछ और खेल

"ब्लैक बक्स" के द्वारा और भी कई प्रकार के खेल दिखाये जाते हैं।

खेल दिखाने वाला दर्शकों को खाली बक्स दिखा कर उसमें अपना एक सधा हुआ तोता रख देवे फिर सीधा करके रखे तो उसमें तोता निकालकर दिखादे। कुत्ते का गायब करना और फिर दूसरी बार बक्स में तोते का रख देना यह काम परदे के पीछे बैठा हुआ खेल करने वाला सहायक करता है। इस प्रकार कुत्ते को तोता व तोते को कुत्ता बनाकर दिखाया जा सकता है। जानदार चीजों को जोड़कर बेजान चीजें-बोतलें ग्लास, थरमस, लोटा आदि गायब करनेके औरदिखाने के लिए भी ब्लैक बक्स काम में लाया जा सकता है।

जादू की अँगूठी

यह अँगूठी देश भर में बहुत से कार्यालय खूब बेच रहे हैं अब हम इसके तैयार करने की विधि लिखते है। यह अंगूठी अष्टधातु की बनानी चाहिए परन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आजकल बहुतसे लोग यह अंगूठी पीतल की बना लेते हैं जोकि ठीक नहीं है अंगूठी अष्टधातु की ही तैयार करवानी चाहिए और ऊपर नग के लिये स्थान छोड़ देना चाहिए ।

जादू की अँगूठी का नग तैयार करना

श्मशान का कोयला, चुम्बक पत्थर, कांच, पीली छपकली की दुम, तेल, चतड़ा, सबको कूटकर नग बनाकर अंगूठी में जड़ लेवें । बस अंगूठी तैयार हो गई है इसमें मृतक आत्मा, चोरी गई वस्तुयें साक्षात दिखाई देने लगेंगी परन्तु यह अंगूठी ११ साल तक के बालक और किसी स्त्री को दिखा सकते हैं । पुरुष को इसमें से कुछ देखने की कोशिश न करनी चाहिए क्यों कि उसको कुछ नहीं दिखाई देगा। अब हम प्रश्न पूछने की विधि लिखते हैं । बालक या स्त्री से कहें कि वह सब ओर से ध्यान हटाकर केवल नग में ही देखें कि जिस समय बालक या स्त्री थोड़ी देर तक नग की ओर देख चुके तो उससे कहें 'कहो' भंगी आओ ।

वह कहेगा–भंगी आ गया है ।'

उससे कहो–'इस कहो कि झाड़ू देवे ।'

फिर कहो–'क्यों'–'भंगी ने झाड़ू दे दिया ।'

वह कहेगा–'हां दे दिया है ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर कहो–भंगी को कहो कि चला जावे।'

फिर पूछो–'क्या भंगी चला गया।'

वह कहेगा–'हाँ चला गया।'

अब बालक से कहो कि–'सक्का आवे।'

वह कहेगा–'सक्के आओ।'

फिर थोड़ी देर के बाद उससे पूछो–'क्या सक्का आ गया है ?'

वह कहे–'नहीं।' तो उसे फिर बुलाओ जब फिर बुलाए तो आप उससे पूछें क्या सक्का आ गया है।

जब वह कहे जी हां आ गया है तो उससे कहें। इसे कहो कि छिड़काव कर दे ?

थोड़ी देर पश्चात् पूछें–'क्या सक्के ने छिड़काव कर दिया है।'

वह कहेगा–'जी हां।' अब उसे कहें कि–'कहो सक्के को चला जाय।

वह कहेगा 'हां' सक्का चला गया है।

तब उसे कहे अब नौकर को कि आवे।

वह कहेगा सेवक आ गया है।

अब उसे कहें कि इससे कहें कि दरी बिछाये।

वह कहेगा कि उसने दरी बिछा दी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब उसे कहें कि सेवक से कहो कि दरी सिंहासन लगाकर रखदेवे और एकपानी का घड़ाभरकर रखदेवे।

अब वह कहे कि सेवक ने यह दोनों काम कर दिए हैं तो उससे कहें कि कहो, राजा जी आओ।

जब वह कहे राजा जी आ गये हैं तो उससे कहें कि उनको कहो कि सिंहासन पर बैठ जाये।

जब वह कहें कि राजाजी आकर सिंहासन पर बैठ गये हैं, तो अपना असली कार्य शुरु करें। जो पूछना हो पूछें दर्शकों के प्रश्न पूछें। इस प्रकार से लड़के बताओ दीपक परीक्षा में पास होगा या नहीं।

अब राजा सिर हिलाकर हाँ या ना करेगा बस यह आपके प्रश्न का उत्तर है।

फिर पूछें क्या कमला के घर लड़का होगा?

राजा सिर हिलाकर हाँ या ना में उत्तर देगा।

बस इसी तरह आप लड़के द्वारा इस अंगूठे से हर प्रश्न का उत्तर ले सकते हैं। यही है वह अंगूठी जिसको देश भरके कार्यालय नित्यप्रति बड़ी भारी संख्या में बेचकर लाभ उठा रहे हैं।

स्वप्न में आपके प्रश्न का उत्तर मिले

ओम नमोस्मणि भद्रा चेटकाय सर्वाय सिद्ध मन स्पर्श कुरुर्श स्वाहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधि—लाल कनेर का फूल लेकर इस मंत्र को १०७ बार पढ़कर सिरहाने रखकर सोवे। सात दिन ऐसा करते रहने के पश्चात, विधाता सब कुछ स्वप्न में आकर बताएगा।

रूमाल को गायब कर किसी दियासलाई के बक्स में से पैदा करना

खेल दिखाने वाला एक दियासलाई का बक्स दिखाता है। दर्शक देखते हैं कि वह दियासलाइयों से भरा हुआ है। खेल दिखाने वाला उसमें से एक दियासलाई निकाल कर किसी दर्शक का या अपना सिगरेट जलाता है। इसके पश्चात् वह एक रूमाल गायब करता है। फिर उसी रूमाल को दियासलाई के अन्दर रखा हुआ दिखाता है और दियासलाइयां गायब हो जाती हैं।

इस खेल को सफलता पूर्वक करने के लिए दो निहायत बारीक रेशमी रूमालों की आवश्यकता पड़ती है। साथ ही दियासलाई का बक्स काफ़ी बड़ा होता है दियासलाई के अन्दर का खाँचा जिसमें दियासलाई रखी जाती है खास तौर से तैयार करना पड़ता है। उसका पेंदा नीचे होने की अपेक्षा बीच में होता है। खांचे के दोनों ओर चीजें रखी जा सकती हैं एक ओर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दियासलाइयाँ भर दो और दूसरी ओर रेशमी रूमाल लपेट कर या गुड़मुड़ी करके भरदो। जिस समय आप दर्शकों को दियासलाई का बक्सा दिखायेंगे तो खाँचे वह भाग दर्शकों की ओर होगा जिसमें कि दियासलाइयाँ भरी हैं, रूमाल वाला रुख हथेली से ढका होगा दियासलाई जलाकर बक्सा को बन्द कर दो और मेज पर इस तरह रखो पटको कि बक्सा का रुख बदल जाये अतएव दियासलाइयों वाला रुख नीचे हो जाय और रूमाल वाला रुख ऊपर हो जाय।

ग्लास में धुआँ पैदा

खेल करने वाला कहता है कि मैं सिगरेट पीता हूं और धुयें को दो ग्लासों में कंद करता हूँ। वह फिर मेज पर दो ग्लासों को रख देता है। फिर सिगरेट पीता है। दोनों को एक दूसरे पर रख देता है। लोग आश्चर्य से देखते हैं कि दोनों ग्लासों के अन्दर धुआँ पहुँच गया है लोग खुशी से तालियां बजा देते हैं।

इसका गुप्त भेद यह कि शीशे के दो ग्लास लो। एक में नमक का तेजाब भीतर लगा लो और दूसरे शोरे का तेजाब लगा लो फिर दोनों को साये में सुखा कर जब एक ग्लास के मुँह पर दूसरे ग्लास का मुंह लगाकर एकके ऊपर दूसरे ग्लास के ऊपर रखा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जायेगा और दोनों ग्लास धुयें से भर जायेंगे। दर्शक यही समझेंगे कि जादू से सिगरेट का धुआँ ग्लासों के अन्दर पहुँच गया है।

आँख बन्द करके सिक्का निकालना

इस आश्चर्य मय खेल को इस प्रकार करते हैं। दर्शकों से आठ दस रुपया या चवन्नी या इकन्नियाँ और पैसे उधार मांग ले और उनमें से ही किसी का हैट माँग लो अपना हैट काम में लावे उस हैट को किसी दर्शक के हाथ में दे दें और तमाम सिक्के उस हैट में डाल दो। अब आप किसी दर्शक से कहें कि एक सिक्का निकालकर उसका सन नोट कर लें उस सिक्के को दस बारह आदमी देखे। इसके पश्चात् वह उस सिक्के को हैट में डाल दे। खेल करने वाला अपनी आंख पर पट्टी बंधवा लेता है और हैट में डालकर तुरन्तु ही उसी सिक्के को निकालकर दर्शकों को चकित कर देता है।

इस खेल का रहस्य बड़ा सादा है। सिक्का बहुत से हाथों में देखने और जाँच करने के लिए आताजाता है जिसके कारण वह सिक्कों की बनस्पत गर्म होजाता है। बाजीगर हैट में पड़े सिक्कों में से उस सिक्के को गर्मी महसूस करके बड़ी आसानी से निकाल लेता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो सिक्के दर्शकों से इकट्ठे किये जाते हैं, वह जेब बटुआ, या अन्टी में रहने के कारण मुख्तलिफ दर्जे की गर्मी रखते हैं इसलिए खेल खिलोने वाले को चाहिये कि वह दर्शकों के सिक्के हाथ में इकट्ठे करे वरना चीनी की तश्तरी में इकट्ठे करे। सिक्कों से अपना हाथ न लगावे प्लेट में थोड़ी देर सिक्का रहने से सब सिक्कों की गर्मी बक्सा दरजे की हो जायेगी और वह हैट में सिक्के डाले जाये तब भी हाथ न लगाया जाय उस तश्तरी से ही हैट में सिक्के उड़ेल कर डाले जायें हैट को हाथ से हिला दें ताकि सिक्के मिल जायें। हैट में सिवाय उस सिक्के को जिसको बहुत आदमियों ने अपने हाथ में लेकर देखा है बाकी सब उनकी अपेक्षा कम गर्म रहेंगे इसलिए खेल दिखाने वाला उस सिक्के को बड़ी आसानी से तुरन्तु निकाल

गिलास से फूल बरसाना

इस खेल का दिखाने के लिए एक बने हुए खास प्रकार के ग्लास को आवश्यकता होती है। यह ग्लास जादू की सामग्री वाली दुकान से मिल सकता है।

यह ग्लास शीशे का नहीं होता पीतल आदि का होता है। जिस पर नक्साकारी तथा कलई आदि होती है। इस ग्लास के नीचे का पैदा खाली है परन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जरा छोटे २ किनारे रहते हैं ग्लास के बीच में एक छलनी नुमा ढक्कन के किनारे पर एक बहुत छोटा बटन होता है जिसे इधर उधर खींचने से छलनी के सुराख खुलते और बन्द होते हैं ग्लास में रंगीन पानी भरो और नीचे पैंदे में असली फूल भरदो अब आप ग्लास को अपने बांये हाथ में इस तरह पकड़ो कि हथेली और उगलियों से ढक जाय। दर्शकों को कहो कि मेरा आज आप लोगों के साथ होली खेलने को जी चाहता है। परन्तु इस तरह से आप पर रंग डालने से आपके वस्त्र अधिक खराब हो जायेंगे मैं इसके मुँह पर छलनीनुमा ढक्कन लगा देता हूँ ताकि फब्बारे की तरह रंग की धारें निकलें और आपके वस्त्र भी अधिक खराब न हों। सभ्यता की होली इस तरह खेली जाती है यह कहते हुये आप गिलास पर ढक्कन लगा दें। दर्शकों को ढक्कन से रंग की धार भी निकलती हुई दिखादें। फिर एकाएक सीधे हाथ की उँगली से बटन खींच कर सीधे हाथ में गिलास को पकड़ें और ज्यों ही दर्शक अपने वस्त्र रंग से खराब होने के डर से उठने की कोशिश करें गिलास का रंग दर्शकों पर तेजी से फेंकें।

दर्शक रंग के स्थान पर अपने ऊपर फूल बरसते देखकर दंग रह जायेंगे और खुशी से तालियाँ पीटने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगेंगी। सीधे हाथ में गिलास आते ही गिलास के मुंह पर छलनीनुमा ढक्कन के सूराख बन्द हो जाने से पूरा ढक्कन लग जायेगा और रंगीन पानी दो पत्ती के बीच बन्द हो जायेगा। गिलास का खुला पैंदा जिसमें पहले से ही फूल भरे हुए थे गिलास के उल्टे हो जाने के कारण ऊपर की ओर आ जायेगा जिसमें झटके के कारण फूल निकल कर दर्शकों के ऊपर जाकर गिरेंगे। सब लोग यह देखकर चकित रह जायेंगे कि रंगीन पानी के स्थान पर फूल कैसे पैदा हो गये।

रूमाल में आग लगाने पर रूमाल का न जलना

अर्क कपूर में रूमाल को सप्त वार तर करके सुखा लें। दर्शकों को दिखाकर उसमें दियासलाई लगाकर फेंक दो। जब तक उसमें अर्क कपूर का असर बाकी रहेगा वह जलता रहेगा। इसके बाद उसे बुझा दें—दर्शक यह देखकर आश्चर्य करेंगे कि उसमें न तो कोई दाग ही पड़ा है और न ही वह जरा सा जला है।

पानी से आग पैदा होना

गंधक नौसादर दोनों की पोटली बनाकर यदि उस पर पानी डालकर मले तो अग्नि उत्पन्न हो जायेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अण्डा उड़ने लगे

अण्डे में से उसका मादा सुई से छिद्र से द्वारा निकाल कर उस में ओस भर देवे इसके पश्चात मोम द्वारा छिद्र बन्द करदे फिर यदि उसको धूप में रखा तो वह उड़ने लग जायेगा ।

दिन में तारे दिखाई दें

सफेद सुरमा लेकर अगस्त के फूलों के रस में ५ दिन घोट कर सुरमा तैयार करें । इस सुरमे को आंख में लगाने से दिन में तारे दिखाई देने लगते हैं ।

छलनी में से पानी न छने

मछली में घी गुआर का गूदा मलकर साये में सुखा ले फिर यदि उसमे पानी भरे तो कदापि न छने ।

मरा बकरा बोले

जमीन पर सिंदूर बिछाकर बकरे के कटे हुए सिर को रखें और उसके मुंह में जिंदा मेंढ़क रख दो और धूप की धूनी दें । तो मेंढ़क चिल्ला उठेगा । लोग समझेंगे कि बकरा बोल रहा है ।

दीवार में आग लगाना

चूने में पानी की तरह शराब और मिट्टी का तेल मिला दो पश्चात उसे पुटवा कर आग लगा दो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उससे कुछ भी हानि नहीं होगी और दीवार जलने लगेगी ।

अनार के फल में से अँगूठी निकालना

बहुत से खेल करने वाले पहले एक अनार में अंगूठी रखकर और उसको जोड़कर अनार में से अंगूठी निकालने का आश्चर्यजनक खेल दिखाया करते हैं परन्तु यह खेल बहुत मामूली दर्जे का है साधारण मदारी भी ऐसा खेल दिखायेंगे क्योंकि वह अपने किसी मेल वाले के पास से अंगूठी लेकर और उसको गायब करने का कौशल दिखाकर अनार में से अंगूठी निकाल कर दिखाने का खेल करेंगे, परन्तु ऐसी दशा में वह दोनों अंगूठियां एक सी होंगी और अनार को किसी दर्शक के हाथ में गौर से जांच के लिए न दिया जा सकेगा । मेल वाले को दी हुई वैसी ही अंगूठी होगी । परन्तु यदि मेल वाला आदमी न हो या कोई दूसरा आदमी हो पीछे पड़ जाय कि उसकी अंगूठी गायब करके अनार में से निकाल कर दिखाओ तो क्या होगा तमाशे वाले को मुँह की खानी पड़ेगी या उसकी तरकीबें अपने खेल को सफल बनाने के लिये लानी होंगी इस खेल में भन्डा-भाढ़ होने का डर है इसलिये ऊँचे दरजे के खेल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने वाले इस विधि से काम नहीं लेते । हमें पहले ही जादू की छुरी से काम लेने की आवश्यकता है। छुरी का हाल हम नीचे लिखेंगे किसी दर्शक से एक अंगूठी उधार लो एक रुमाल में सबको दिखाकर यह साबित करो कि रुमाल में कुछ नहीं है सीधे हाथ में दर्शक लेकर अपने बांये हाथ के अंगूठे और दो उंगलियों से पकड़ो और घाई या हथेली में एक पीलल की अंगूठी छिपाये रहो। असली अंगूठी को रुमाल से ढका जाय बस वहीं पर असली की जगह नकली और नकली की जगह असली कर लो रुमाल से अंगूठी ऊपर से पकड़ने के लिए किसी तमाशाई से कहो। जब अंगूठी को रुमाल पर से पकड़ ले तो उसे कहो कि वह अंगूठी को पास के कूए में डाल आवे। दर्शक यही समझेंगे कि रुमाल में तमाशाई द्वारा असली अंठगूी है।

जादू की छुरी का हाल नारंगी में से चवन्नी निकालना

यह खेल बड़ा रोचक है और छोटे बड़े सब ही प्रकार के लोगों को आश्चर्य में डालने वाला है। तमाशा दिखाने वाला दर्शकों में से किसी से एक चवन्नी उधार मांगता है और उसको किसी तरीके से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायब कर देता है इसके बाद वह उस चवन्नी को नारंबी या सेब आदि फल के भीतर से उसे काटकर निकालकर दिखाता है इस खेल के दिखाने के लिये एक खास प्रकार की छुरी बनवाने की आवश्यकता है ऐसी छुरी या सामग्री उस दुकान पर भी मिल सकती है जो जादू के खेलों का सामान बेचती है। छुरी और बस्ता भीतर से पोले होते हैं। चवन्नी स्प्रिंग से रुकी रहती है। छुरी नोंक में इतनी जगह खाली होती है कि जिससे चवन्नी सुगमता के साथ अन्दर बाहर जा सके। जब दस्ते के ऊपर वाला बटन उंगली की सहायता से दबाब देकर खींचा जाता है उसी समय तार स्प्रिंग को ढीला कर देता है और वह चवन्नी को फेंक देता है जिससे वह नोंक के सुराख द्वारा बाहर निकल पड़ती है। छुरी किसी को देखने मत दो उसे मेज पर रखो कि छुरी का दस्ता दर्शकों की ओर रहे चवन्नी और नारंगी आदि फल जहां तक सम्भव हो किसी दर्शकों से ले लो और तश्तरी में फल रखकर छुरी से काटो और बटन दबाकर चवन्नी निकाल कर दिखाओ। दर्शक देखकर चकित रह जायेंगे। यदि दर्शकों में से कोई इस बात पर जिद करें कि छुरी भी चवन्नी और नारंगी की तरह से उन्हीं की ही हो और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम्हारी छुरी से काम पसन्द न करे तब भी घबराना न चाहिए। दर्शक की छुरी लेकर और जहां पर कि गायब हुई चवन्नी छिपी हो वहां से उसे हाथ की सफाई से निकालकर छुरी के दस्ते के बीच वह चवन्नी छिप जाय फिर काटने में होशियारी से चवन्नी फल के भीतर दिखा दो।

कपड़े में आग लगाना

कपड़े को शराब में भिगोकर आग लगादो तो कपड़ा न जलेगा परन्तु इतना ध्यान रहे कि शराब समाप्त होने के पूर्व ही अग्नि बुझा देनी चाहिये

पानी के गिलास में पैसा गायब करना

इस खेल के दिखाने के लिये ऐसे तांबे के गिलास के बनाने की आवश्यकता है जो ऊपर से चौड़ा हो। और नीचे से उसका पैंदा पैसे के बराबर गोल हो।

अर्थात् उसके अन्दर यदि पैसा डाला जाय तो पैंदे से फिट बैठ जाय पैंदा इसका सादा या नक्शी कैसा ही हो ऐसा ही आपको दुहरा पैंदा तैयार करना चाहिए। जो पैसे के बराबर गोल और रंगीन या नक्शी हो। यह चीजें या तो आप बनवा लीजिये या किसी ऐसी दुकान से जहां पर कि जादू का सामान बिकता हो खरीद लीजिये उस तांबे के गिलास को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दर्शकों को जांच के लिए दे दीजिए फिर आप उसमें पानी भर दो किसी दर्शक से एक पैसा किसी से एक रुमाल भी मांग लीजिए। पैसे पर निशान डलवा लीजिए आपके हाथ की घाई में छिपा हुआ नकली पैसा हो जो रुमाल की ओट में पैसे से बदल लीजिये और नकली पैसे को रुमाल के अन्दर बन्द करके किसी दर्शक के हाथ में तांबे का गिलास जो पानी से भरा है दे दीजिए। गिलास के ऊपर रूमाल को इस तरह पकड़ाइये कि रुमाल से गिलास ढक जाय। अब आप उस दर्शक से कहिए कि वह रुमाल में से पैसे जो वास्तव में पैसा नहीं बल्कि नकली पैसा है मगर दर्शक उसे पैसा ही समझते हैं। गिलास में छोड़ दे खट की आवाज होते ही सब समझेंगे कि पैसा गिलास में गिर गया है अब आप रुमाल से ढके गिलास को एक दो बार हिलाकर दिखा दीजिये कि गिलास में पैसा मौजूद है परन्तु वास्तव में गिलास के हिलाने की आवश्यकता इस कारण पड़ती है कि नकली पैसा पैंदे में ठीक तौर से फिट हो जाय जो पानी के कारण ठीक बैठ जाएगा। इसके पश्चात् आप रुमाल को उठाकर और पानी को फैंक कर दिखा दीजिये कि पैसा गायब हो गया अब आप निशान लगे पैसे को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसे आपने किसी दर्शक से उधार लिया है और जो अभी तक आपके हाथ की घाई में है या और जगह छिपा हुआ है आसानी से किसी दर्शक की नाक या आँख आदि से निकाला सकते हैं।

जादू का पिस्तौल

यह पिस्तौल, आठ इंच के करीब लम्बा होता है और इसका दस्ता लाकड़ी का होता है पिस्तौल के सिरे पर एक छोटी नली फिट की हुई है जो कि टीन की बनी हुई होती है और जिस पर काला रंग हो रहा है और जिसका दूसरा सिरा काफी चौड़ा होता है इसी काफी चौड़े सिर अर्थात् मुंह में एक रेशमी रुमाल रखा जाता है जिसे खेल करने वाला पेन्टर हुआ दर्शकों को विश्वास दिलाता है कि वह रुमाल को पिस्तौल की आवाज के साथ गायब किये देता है। वह बांयें हाथ को नाली के चौड़े मुंह पर जिसमें कि उसने रेशमी रुमाल को रखा रहता है ताकि यह जाहिर हो कि रुमाल को गिरने से बचाने के लिए हाथ रखा है फिर दर्शकों की ओर से सीधे हाथ की ओर मुड़कर मेज के पास चाहे जहां को निशाना लगावे. और तुरन्त ही पिस्तौल को मेज पर इसी प्रकार रखे कि उसका चौड़ा सिर मेज के पीछे बैग थैले पर हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और पैन्टर करता हुआ हाथ की सफाई से रुमाल को को निकालकर बैग डाल दे मेज का पिछला भाग दर्शकों की दृष्टि से ओझल होने के कारण यह कार्य बड़ी सुगमता से सम्पन्न हो सकता है। इसके पश्चात् खेल करने वाला किसी दूसरी जगह से रूमाल को निकालकर दिखावे। यह रूमाल पहले रूमाल की तरह का होगा जिसे जादूगर पहले छिपाकर सब काम तैयार कर लेता है।

जल पर मृगछाला बिछाना

लिसौढ़े का गूदा लेकर आठ बार मृगछाला पर लेप करके सुखावे फिर यदि पानी में बिछाकर आसन बांधकर बैठ जाय तो मृगछाला कदापि न डूबेगी।

घड़ी तोड़कर सही करना

खेल करने वाला किसी दर्शक से एक घड़ी लेता है इसको एक हवन दस्ते में डालकर चूर-चूर कर डालता है। घड़ी के चूरे को वह कुए में डलवा देता है इसके पश्चात् एक पिस्तौल का फैर करता है और उसी घड़ी को तकिया मोख में रखी हुई दिखाता है। इस खेल को कामयाबी के साथ दिखाने के लिए ऐसे हवन दस्ते की आवश्यकता होती है जिसके नीचे पेंदा न होकर बीच में ही खेल करने वाला घड़ी लेकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हवन दस्ते में डाल दे और उसको इस तरह से पकड़ कर दर्शकों को सिखाता फिरे कि बाँए हाथ की हथेली और उंगली से नीचे पैंदा ढका हुआ हो बायें हाथ में एक नकली घड़ी एक आने वाली छिपी हो और सीधे हाथ की उंगलियों से हवन दस्ते के मुंह में असली घड़ी पड़ी हो पकड़े हुए हो जिस समय दिखाकर वापस जाओ तो अपने शरीर की आड़ में हवन दस्ते का रुख पलट लो ऊपर का मुंह नीचे की ओर कर असली घड़ी सीधे हाथ की उंगलियों में दबालो और हवन के दस्ते का यह रुख जिसमें नकली घड़ी पड़ी है ऊपर को जायगा और सीधे हाथ की घाई में असली घड़ी छिपाकर मेज पर रख दो और वहां से हवन दस्ते की मसूली उठालो मूसली उठाने में घड़ी सुगमता से मेज पर पहुँच सकती है जिस दर्शक की घड़ी है अजीब चक्कर में पड़ जायगा परन्तु आप इस बात की परवाह न करें और हवन दस्ते में मूसली चलादे घड़ी को एकबार दर्शकों को दिखाकर मूसली की चोटों से नकली घड़ी का चकनाचूर करदें और एक तश्तरी में उसे उलटकर दर्शकों को दिखादे अब आप दर्शकों से कहें कि घड़ी के चूरे को पिस्तौल की नली में भरता हूँ इस पिस्तौल के फायर के साथ दर्शक की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घड़ी सही सलामत निकलेगी यह कहकर आप पिस्तौल में जोकि हवाई होती है उस चूरे को भर दें और उसकी नली में ठूसकर कागज भर दें और इधर आपका सहायक दर्शक वाली घड़ी को जो मेज पर किसी चीज की आड़ में आपने रख दी थी चुपचाप ले जाता है और दर्शकों की भीड़ के पीछे चुपचाप किसी ताक या मोखे में रख देता है आप इधर-उधर निशाना ताकने का उपक्रम कर आखिर में उसी ताक में या मोखे की ओर निशाना लगाते हैं। पिस्तौल से गरज का शब्द होता है और आग निकलती है दर्शक देखते हैं कि उस मोखे या ताक में असली घड़ी सही सलामत रखी है जिसे पाकर घड़ी के मालिक की जान में जान आती है। दर्शक आश्चर्य से आपकी प्रशंसा में तालियाँ बजाने लगते हैं।

इस खेल में जो पिस्तौल बर्ता जाता है वह विशेष प्रकार की बनी होती है। वह असली नहीं होती वह जादू के खेलों का सामान बेचने वालों से मिल जाती है। उसमें फायर के लिए पोटाश की टोपियाँ भी उनके यहाँ से ही मिल जाती हैं इन पोटास की टोपियों में से पिस्तौल के चलने पर असली पिस्तौल की सी आवाज निकलती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिच्छू पैदा हो

गोबर में दही और गधे का मूत्र डाल देवे और उसे मिट्टी से ढक देवे तो आठ ही दिन में बड़े-बड़े बिच्छू उत्पन्न हो जायेंगे ।

चने की किशमिश और किशमिश के चने बनाना

इस खेल में खेल दिखाने वाला, अपनी अलग मेज पर टीन के दो डिब्बे रखता है। यह दोनों डिब्बे लम्बे और गोल हैं । एक मेज के डिब्बे का ढक्कन खोलकर दिखाया जाता है तो उसमें भुने हुए चने हैं और दूसरे ढक्कन खोलने पर उसमें किशमिश भरी हैं । खेल करने वाला दोनों डिब्बों को अलग-२ मेज पर बड़े-२ रंगीन रूमालों से ढक देता है और एक बन्दूक या पिस्तौल का शब्द करता है उसी समय रूमालों को उठाता है । दर्शक आश्चर्य से देखते हैं कि जिस डिब्बे में किशमिश थी उसमें चने हो गये हैं ।

इसके पश्चात् इस यंत्र पर इस प्रकार हाथ रखो कि अपने अँगूठे से अँगूठा मिला रहे और इस प्रकार छोटी उंगली यानि कनिष्टका एक दूसरे से परस्पर मिली रहे इन चारों की उंगली मिली रहनी चाहिए।

सिद्ध को ध्रुव की ओर मुख करके इस मन्त्र के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मुख बैठना चाहिए। प्रथम सिद्ध साधकों से कहे कि मित्रों! परमात्मा का ध्यान करो। तत्पश्चात साधक और सिद्ध एक ही आत्मा को जिसको इस यन्त्र में बुलाना हो, चुपचाप एक चित्त होकर ध्यान करे।

यदि रात्रि का समय हो तो मोमबत्ती की रोशनी को जरा विशेष करें फिर जरा देर बाद रोशनी को कम करदें यानि धीमी जलती रहे जिससे कि सबका एकाग्रचित्त हो जाय। थोड़ी देर के बाद साधकों के शरीर में एक प्रकार की सनसनाहट पैदा अर्थात् आत्मा का प्रवेश उनके शरीर में होगा और वह आत्मा साधकों की उंगलियों के पास करती हुई विद्यु त चीजों में प्रविष्ट होगी उस वक्त साधकों की उंगलियां काँपने लगेगी और दृष्टि स्थिर हो जायेगी। साधक चित्र लिखित सा दिखाई देगा। उस समय सिद्ध मन्त्र से प्रश्न करे कि यदि इस मन्त्र में किसी की आत्मा की शक्ति आ गई हैं तो मेरी ओर का (यन्त्र का) पाया ऊँचा हो जाय यदि पैदा हो गई तो अवश्य उठ जायगा। यदि न उठे तो सिद्ध और तीनों साधक कुछ समय तक उसी आत्मा का ध्यान करे। यदि प्रथम दिवस यह मन्त्र सिद्ध न हो तो कदापि निराश होकर छोड़ न दें। बल्कि उसी स्थान पर समय वही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनुष्य दस पन्द्रह दिन तक अभ्यास करें तो यन्त्र अवश्य सिद्ध हो जाय। जब मन्त्र सिद्ध हो जाये और पिलांगचित्र यन्त्र का पाया उठने लगे यानी आत्मा उसमें प्रवेश कर जाय तब सिद्ध को चाहिये कि उससे मालुम करे कि यदि आप हिन्दू हैं तो पाया गिरे यदि मुसलमान हैं तो दो बार और ईसाई है तो तीन बार पाया गिरे। अब जितनी बार पाया गिरेगा उसको उसी जाति का जानना चाहिए। यदि हिन्दू हो तो राम राम, मुसलमान हो तो सलाम बन्दगी और ईसाई हो तो गुड नाईट करना चाहिये।

आपकी अवस्था क्या है ? जितने वर्ष की अवस्था हो उतनी ही बार पाया गिरे और जब अवस्था मालुम हो जावे तब कहे यदि आप पढ़े लिखे हैं तो एक बार पाया गिरे वरन् दो बार गिरे। यदि आप नागरी पढ़े लिखे हैं तो पाया एक बार, उर्दू पढ़े हैं तो पाया दो बार; यदि अंग्रेजी पढ़े हैं तो पाया तीन बार गिरे।

आप अपना नाम बतला सकें तो पाया एक बार गिरे वरन् दो बार।

जिस भाषा में जानना आत्मा ने बतलाया होवे उसी के अक्षर उच्चारण करे जिस पर पाया गिरे उसी अक्षर को लिखे और फिर आदि से शुरू करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जैसे कि आत्मा का नाम रामस्वरूप है और नागरी है तो तुम आदि से अक्षर आहिस्ता-आहिस्ता आरम्भ करो। जबकि अक्षर 'र' आवेगा उसी समय पाया गिरेगा। इसी प्रकार 'म' पर गिरेगा। इसी प्रकार पाया गिरते-२ नाम पूरा हो जायेगा।

जबकि आपको नाम मालुम हो जावे तो इसी प्रकार आपकी जो इच्छा हो पूछते जाय और लिखते यहां तक कि भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों का हाल मालुम हो जायेगा। परन्तु ध्यान रहे कि यदि किसी सज्जन मनुष्य की आत्मा होगी सत्य-सत्य हाल बतायेगी। यदि किसी खराब जाति की होगी तो असत्य हो सकता है।

जब आत्मा से अपने मतलब सिद्ध करलें तो आत्मा से आप वापिस जाने की प्रार्थना करें। जिस समय मेज में आई हुई आत्मा वापिस जावेगी तो पूर्वानुसार साधकों की उंगलियों द्वारा प्रवेश करके वापिस चली जावेगी। इसके बाद साधक सच्चिदानन्द ज्योति स्वरूप का ध्यान करके पिलांगचिन्ह को हटा दें और अपने हाथ मुँह धो डालें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृतक आत्माओं को बुलाने और उनसे बातचीत करने की दूसरी विधि

इस आत्म विद्या के कई ज्ञाताओं का एक दूसरा मत है। वह यह कि पिलांगचिह्न यन्त्र यानी करामाती मेज के नीचे शीशे ग्लास में साफ पानी भरके रक्खें। उसके समीप एक मोमबत्ती जलादें। मोमबत्ती के जलने से जिस वक्त प्रकाश गिलाश पर पड़ेगा, उसी आत्मा का आवाहन होने लगेगा, पिलांगचिह्न यंत्र पर यह प्रयोग रात्रि के साढ़े नौ बजे शुरु करना चाहिये। लेकिन ध्यान रहे कि जिस समय आंधी चल रही हो वर्षा हो रही या बादल गरज रहे हों। उस समय प्रयोग करना चाहिए क्योंकि ऐसे समय में पिलांग-चिह्न यन्त्र अपना काम नहीं करता। चूंकि, यदि बादलों की गरजना हो रही हो या बिजली चमक रही हो उस वक्त आत्मायें वापिस चली जाती हैं। साधकों को यह बात कभी भी न भूलनी चाहिये।

जादू का कलम या विद्युत लेखनी

यह विद्युत लेखनी या जादू का कलम योरपियन सभ्यता का एक आविष्कार है। जिस प्रकार पिलांग-चिह्न यन्त्र द्वारा मरी आत्माओं से बातचीत की जाती हैं उसी तरह इस जादू के कलम द्वारा भी उनसे बात-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चीत करते हैं लेकिन पिखांगचित्र यन्त्र ता करामाती मेज पर और इस विद्यु त लेखनी के काम करने के ढंग में बड़ा अन्तर है पिलांगचित्र मेज में साधक द्वारा मृतक आत्मायें मेज मे प्रवेश करती हैं परन्तु विद्यु त लेखनी हो तो मृतक आत्मा द्वारा कागज पर सब कुछ लिखबा लिया जाता है। दोनों जो भी प्रश्न किया जाता है उसका उत्तर यह विद्यु त लेखनियाँ अन्य देशों से भारत में आती है। अब यहाँ भी तैयार होने लगे हैं, लेकिन यदि कोई व्यक्ति नाहीं किसी दूसरे की लेखनी इस्तेमाल करना चाहते हों और ना हों अपने देश की ही बाजार से खरीदना चाहते हों तो वह इसे घर पर तैयार कर सकते हैं इसके तैयार करने की विधि यह है कि सबसे पहले आप एक बिल्कुल 'पिलांगचित' तन्त्र जैसी मेज के साथ एक तख्ता बहुत छोटा तैयार करलें लेकिन यह तख्ता गोलाकार न होकर पान के आकार का होना चाहिए इसमें एक सुराख करें, जिसमें कि पैंसिल भली भांति आ जाय फिर एक चुम्बक की कील ले और निचले भाग में बिल्कुल शक्ति योग से उसमें हड्डी के दो पहिये जोड़ दे और जो सुराख बनाया है उसमें पेन्सिल लगा दें। अब सफेद या बादामी कागज पर इस पिलांगचित को रखें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस पर दो व्यक्ति पहले की नाईं नहीं) अपने दोनों हाथों को उँगलियाँ रखें परन्तु पिलांगचित पर दबाव न पड़े। अब दोनों आदमियों के एकाग्रचित्त और मानसिक विचारों का प्रभाव पिलांगचित पर पड़ने लगेगा।

जिस समय अपने मानसिक विचारों को पिलांगचित पर डालना हो उस समय पहले भगवान श्री हरि की प्रार्थना और ध्यान आवश्यक है। इसके बाद दोनों व्यक्तियों के एकाग्रचित से पैन या पेन्सिल चलने लगेंगी। जो दो साधक पिलांगचित पेन्सिल का अभ्यास करें वह दोनों एक वर्ण के हों। यदि दोनों काले रंग के हों तो ठीक है वरना उसमें से एक का रंग काला और दूसरे का गोरा हो तो इससे भी काम चल सकता है। पिलांगचित पैंसिल को चलाने का काम स्त्रियां भी कर सकती हैं। मगर उनका कुसुम सी कोमल और सरोज सी सुन्दर होना आवश्यक है क्योंकि जैसाकि देखने में आ चुका है। कुरुपा और वृद्धा स्त्रियों के हाथ से पिलांगचित पैंसिल नहीं चलेगी। यह दो पुरुष जो इस काम के लिए बैठें वह भी शिक्षित, सुन्दर और कम आयु वाले होने चाहिये। दोनों में से न तो कोई वृद्ध हो,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिलांगचित का जो दो व्यक्ति काम करने वाले हैं उनके अतिरिक्त अन्य कोई मनुष्य उनको छूने की कोशिश न करे और न किसी को छूने की आज्ञा है ऐसा करने पिलांगचित की विद्युत शक्ति लोप हो जाती है।

यदि पिलांगचित ज्यादा देर धूप में रखा जाये तो भी उसकी विद्युत शक्ति का लोप हो जाता है। जहाँ अधिक सर्दी हो वहाँ भी उसका चलना कठिन है, जैसा कि इस यन्त्र के वर्णन में कहा गया है। पिलांगचित पेन्सिल वाले यन्त्र को ऐसे स्थान पर कदापि न रखो जहाँ अधिक गर्मी या सर्दी हो। जाती है।

जिस समय मृतात्माओं को बुलाना हो उस समय पिलांगचित में पैंसिल लगाकर कागज (सफेद या बादामी) पर लिखों उसके बाद दोनों आदमी यानी साधकहाथ की उंगलियों को पिलांगचित के ऊपर इस तरह रखों कि उनके पोरुओं का दबाव उस पर बिल्कुल न पड़े, थोड़ी देर में आत्मा की विद्युत शक्ति का प्रभाव उन पर पड़ेगा। इससे हाथों की आकर्षण शक्ति तीव्र हो जावेगी जिससे हाथों में चीटियाँ सी रेंगने लगेगी। श्वांस कुछ-२ जल्दी चलने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगेगा और उसकी सी हालत हो जायगी। उस समय मृतक आत्मा का प्रवेश साधक की उगलियों द्वारा पिलांगचित में हो जावेगा। पिलांगचित हिलने लगेगा। साधक को चाहिये कि उस समय प्रश्न करे और उसके प्रश्न का उत्तर पिलांगचित पैंसिल द्वारा कागज पर लिखा जावेगा जो कि शत प्रतिशत सही होगा।

पिलांगचित लेखनी का प्रयोग रात के नौ बजे जिस वक्त कि किसी प्रकार का शोर गुल नहीं करना चाहिये और मृतक आत्मा के आने की प्रतिक्षा एक घन्टे तक करनी चाहिये, यदि एक घन्टे तक आत्मा न आवे तो घबराकर प्रयोग छोड़ने की कोशिश न करनी चाहिये बल्कि इसका प्रतिदिन रात के नौ बजे प्रयोग चालू रखना चाहिये। श्री भगवान हरि की कृपा से तीन चार दिन में सफलता प्राप्त होगी।

अचम्भे के काम

बहुत से काम ऐसे होते हैं जिनका करना कठिन होता है, लेकिन अनेक प्रकार के उपायों और तदवीरों से वह आसान बनाये जाते हैं। इससे मिलती जुलती बात यह है कि कितने ही ऐसे काम होते हैं, जो देखने में बहुत ही अचम्भे के मालुम होते हैं, परन्तु वह आसानी के साथ किये जा सकते हैं कि वह तरीके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और उपाय मालुम होने चाहिये जिनसे दोनों तरह की बातें आसान हो जाती है।

हम इन पन्नों में कुछ ऐसी ही बातें बतायेंगे जो कुछ तो अचम्भे की होगी और कुछ देखने सुनने में असम्भव सी मालुम होंगी। उस प्रकार की बातें और इस तरह के काम आसानी के साथ कैसे किये जा सकते हैं, यह बात यहां पर समझाई जायेगी इसके साथ एक बात और है वह यह है कि काम समय असमय हमारे काम भी आ सकते हैं।

पानी का बर्फ बनाना

जाड़े के दिनों में जब पानी जम जाता है तो उसको बर्फ कहते हैं। जाड़े के दिनों में तो इसकी कोई जरुरत नहीं पड़ती लेकिन गर्मी से कितने ही जरुरी काम निकलते हैं। जब बहुत गर्मी पड़ती हैं और ठंडा पानी भी नहीं मिलता तो बर्फ से लोग ठंडा करके पीते हैं। इसके सिवा और भी काम बर्फ से निकाले जाते हैं–

(१) बना हुआ खाना काफी समय तक बर्फ के साथ रखकर सुरक्षित रखा जा सकता है।

(२) गर्मी के मौसम में मछलियाँ बर्फ में रखकर कितने दिनों तक काम के योग्य रखी जा सकती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(३) अनेक भयानक रोगों में बर्फ से सहायता ली जाती है, इस प्रकार कितने ही काम बर्फ से निकाले जाते हैं। यह बर्फ बड़े-२ शहरों में आसानी से पाई जाती है, क्योंकि प्रायः सभी बड़े-२ शहरों में बर्फ की फैक्ट्रियां खुली हुई हैं। मगर देहातों और कस्बों में बर्फ का मिलना कठिन हो जाता है, इसलिए यदि कोई ऐसा उपाय मिल सके जिससे देहातों और कस्बों में भी जहां पर कि फैक्ट्रियां नहीं है, लोग सुगमता के साथ बर्फ बना लिया करें तो बहुत लाभ हो सकता है। इसके लिये नीचे उपाय बताया जाता है, जिससे कोई भी आदमी पानी को जमाकर शीतल बर्फ बना सकता हैं।

सरेस मांही बाजार से खरीद लें और उसको खूब महीन-२ पीसकर अपने पास रखलें और जब बर्फ जमानी हो तो पहले पानी को गर्म करना चाहिये और फिर गर्म पानी को दूसरे बर्तन में डाल उस पर घिसी हुई सरेस मांही छिड़कना चाहिए, गरम पानी पर उसको छिड़क कर रख देना चाहिए बस बर्फ जम जायेगी।

अण्डों की शीशी

एक गोल बड़ी शीशी में बड़े-२ गोल-२ अंडे भर कर रखे जाते हैं। उस शीशी का पेट तो इतना बड़ा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता है कि उसमें कई अण्डे आ सकते हैं, लेकिन उसका मुंह इतना छोटा होता है कि उसमें बिना तोड़े नहीं जा सकते। परन्तु जब लोग उस शीशी में समूचे अण्डे को देखते हैं तो बड़ा ताज्जुब मानते हैं।

लोगों की समझ में यह बात नहीं आती कि इतने बड़े अण्डे इस शीशी में अन्दर कैसे पहुँच गये जबकि उसका मुंह अण्डे से छोटा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह बहुत अचम्भे का काम है। उस शीशी के अन्दर इतने बड़े अण्डे कैसे चले जाते हैं। इसकी तरकीब नीचे बताई जाती है—

कुछ ताजे अण्डों को लेकर उनको तेज सिरके में भिगो देना चाहिये। कुछ दिन भीगे रहने के बाद अण्डे बिल्कुल मुलायम पड़ जायेंगे और वह दबाने से दब जायेंगे। जब वह मुलायम होकर ढक दें तो सूखने के बाद अण्डे फिर पहले के समान बड़े और सख्त हो जायेंगे।

—※—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(यह केवल रजिस्टर्ड वैद्यों के लिए है)

विचित्र टोट के सन्यासी चुटकले

१

गर्मी का सिर दर्द

यदि गर्मी के कारण सिर में दर्द हो तो चन्दन घिसकर माथे पर लेप करने से दर्द बंद हो जाता है। इसी प्रकार जवे के आटे को पानी में घोलकर माथे पर लेप करना भी अति लाभदायक है। यदि सर्दी के कारण से सिर में दर्द हो तो जायफल को मीठे तेल में घिस कर माथे पर लगाने से पीड़ा शान्त हो जाती है।

२

दमा की अकसीर दवा

मोर के पंखों को जला कर राख बना लें और एक रत्ती पान में रखकर खिलाया करें दस दिन का सेवन काफी है।

३

अग्नि दग्ध की चिकित्सा

असली हींग लेकर पानी में हल करें और मुर्गी के पैर से दग्ध स्थान पर दिन में दो तीन बार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगावें और रात्रि को भी एक दो बार लगा दें। जलन बहुत जल्दी दूर हो जावेगी और छाला नहीं पड़ेगा।

४

चम्बल की दवा

ढाक के बीज सूक्ष्म पीस कर चूर्ण बना कर रखें और फिर खट्टे दही या छाछ में घोट कर प्रातः सायं लगाया करें।

५

अकसीर संग्रहणी

कुछ छाल चार तोला लेकर सूक्ष्म चूर्ण बना लें। फिर इस चूर्ण की समभाग सात पुड़िया बनावें और प्रतिदिन एक पुड़िया दही के साथ खिलाया करें यथा सम्भव भूख सहन करे, हां दही जितना चाहे पिलाते रहें या दही न मिले तो छाछ ही पिलाते रहें यदि भूख अधिक सताये तो दही चावल खिलायें। एक सप्ताह में शर्तिया लाभ हो जायेगा।

६

हर प्रकार के दस्त रोकने का योग

इस प्रयोग से रक्तसार, पेचिश और हर प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यो :–ताल मखाना एक तोला, दही में मिला कर पिलावें। इसी प्रकार दिन में तीन बार इस्तेमाल किया करें। निश्चय ही दस्त बन्द हो जावेंगे।

७

खूनी पेचिस के लिए १२५ वर्ष की सचिचका का प्रयोग

वायवडिंग के बीज अधभुने तीन माशा अर्क गुलाब या मिश्री के शबंत से दें, आशा है दो तीन मात्राओं से ही आराम हो जावेगा।

८

अक्शीर हैजा

तिल के पत्ते छः माशा ३ तोला पानी में घोट कर पिलावें इसकी दो मात्रा पिलाने से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

९

कृपालु दवा

छोटी इलायची के छिलके एकत्र करके सुरक्षित रखें। क्योंकि यह कई रोगों के लिये अति गुणकारी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध हुए हैं। विसूचिका के लिए भी यह अति उत्तम दवा है। विधि यह है कि छोटी इलायची के छिलके ४ तोला लेकर सेर भर पानी में पकावे जब पकते-२ पाव भर पानी शेष रह जाय तो उतार कर शीतल करे और रोगी को दो-दो तोला पिलाते रहें।

गुण-विशूचिका की प्रत्येक दशा में लाभदायक है। इसके अतिरिक्त है जा के सब उपद्रव वमन तृषा आदि को बन्द करके मूत्र जारी करता है।

१०

उदर शूल का आश्चर्यजनक चुटकला

जब रोगी को प्रतीत होने लगे कि उदर शूल आरम्भ होने लगा है। तो तत्काल पौन तोला गौ घृत अग्नि पर पकाकर उसमें एक साबुत लालमिर्च डाल दें और जब मिर्च जलकर काली हो जावे तो उसको निचोड़कर फैंक दे और घी रोगी पिला दें ईश्वर की कृपा से दर्द वहीं थम जायेगा।

११

दमा की ग्रामीण चिकित्सा

ऐसी गाय को जो पहली बार बच्चा दे, उसका दूध निकालकर तुरन्त ही रोगी को पिला दें। ईश्वर की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृपा से एक ही बार इस्तेमाल से आराम हो जायेगा। इस ग्रामीण चिकित्सा से दमा के अनेक रोगी स्वस्थ हो चुके हैं परन्तु कोमल प्रकृति के लोगों को इस चिकित्सा से परहेज रखना चाहिए।

१२

खुश्क खाँशी का अद्वितीय चुटकला

खुश्क खांशी बहुत कष्टप्रद रोग है रोगी खाँसते २ तंग आ जाता है, किन्तु यह हटने का नाम नहीं लेती। इसके लिये मुलहटी का प्रयोग अत्यन्त ही गुणकारी सिद्ध हुआ है।

१३

कण्ठ माला

पीलू के पत्तों को ऊँट के मूत्र में पीसकर लेप करें। आश्चर्यजनक गुण करता है यह चूँकि एक पीर साहब का टोटका है। इसलिए गुणों की आशा की जा सकती है।

१४

इसी प्रकार का एक और टोटका

हल्दी ६ माशा पीसकर प्रतिदिन पानी से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खिलाया करें और इसी को घिसकर लेप किया करें। साधारण और सरल योग है।

पुनः

काले सांप की केंचुली को तिल के तेल में जला कर और अच्छी तरह खरल करके मरहम बना लें और प्रतिदिन कंठ माला पर लगाया करे पीड़ा मिट जाती हैं।

१५

बिच्छू काटे का अगद

जब बिच्छू काट खाये तो उसे पकड़ कर मार डाले और दहकते हुए अंगारों पर डालकर दक्षित स्थान पर उसकी धूनी से पीड़ा मिट जाती है।

१६

बच्चों के सूखा मसान के लिये टोटके

इस रोग से बालक दिन प्रतिदिन सूखकर अस्थि पिंजर रह जाता है, रोग के आरम्भ में कुछ पता नहीं चलता वैसे यहां पर इसके दो चिह्न लिख देता हूँ।

जिस बालक को इस रोग के होने का सन्देह हो उसके कान की लौ को चुटकी से दवादें। यदि बालक को कष्ट न हो तो निः सन्देह यही रोग है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस रोग से ग्रसित बालक को हर समय दूध पीने की धुन लगी रहती है, यह बालकों का यक्ष्मा रोग है। जो कोई इलाजों से दूर हो जाता है।

चुटकले

जब बालक को सूखा रोग हो तो उसके मेरुदण्ड पर ताजा गोबर मले और ध्यान पूर्वक देखे कि पीठ में से छोटे-२ काले मुँह के कृमि निकलते होंगे उनको चुन कर फेंक दें और यही क्रिया प्रतिदिन किया करें। कुछ दिनों में बालक स्वस्थ हो जायेगा।

खुश्क आमले आवश्यकतानुसार लेकर बारीक पीस लें और दही के पनीर में मूंग के समान गोलियां बनावें। मात्रा गोली प्रातः और सायं देना अति लाभकारी है।

१७

बाजीकरण चूर्ण

कौंच के बीजों की दस तोला, मिश्री दस तोला दोनों को कूट पीस कर चूर्ण बनालें और सुरक्षित रखे मात्रा ७ माशा रात्रि को सोते समय गौर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुग्ध सेवन किया करें। कुछ दिनों के सेवन से वीर्य उत्पन्न होकर बाजीकरण शक्ति बढ़ जायगी।

१८

चौथिये ज्वर में टोटका

खटमल जितने मिल सकें संग्रह कर लें जब मर जायें तब एक लोहे के तवे को आग पर गरम करके नीचे उतार लें और मरे हुए खटमलो को उस तवे पर डालकर जरा सा हिला दें ताकि उनकी तरी खुश्क हो जाय (बस तत्काल ही तवे पर से उतार लें वरना उनके काले हो जाने पर क्रिया बिगड़ जायेगी) फिर पीस कर सुरक्षित रखें, मात्रा एक ग्रेन से एक रत्ती तक ज्वर आने से एक या डेढ़ घंटा पूर्व मक्खन में लपेट कर दें अधिक से अधिक तीन मात्राओं में ज्वर दूर हो जायेगा।

१९

अकसीरे नासूर

बारुद को कड़वे तेल में पीस कर रखें और आवश्यकता के समय घाव पर लगाया करें कुछ दिन लगाने से जख्म भर जायगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२०

रक्त शोधक वटिका

कुटकी को सूक्ष्म पीस कर शहद की सहायता से जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें और दो गोली प्रातःकाल शीतल जल से खिलाया करें, उत्तम कोटी की रक्त शोधक दवा है।

२१

दद्रु नाशक जड़ी

का ही जरद (पीली) आवश्यकतानुसार लेकर सरसों के तेल में खूब अच्छी तरह पीसलें और चम्बल पर लेप कर दें। प्रथम तो एक ही लेप से आराम हो जायेगा वरना दूसरा लेप और कर दें।

२२

बाल कभी सफेद न हों

मुन्डी बूटी के पुष्प जब पकजावें तब छाया में सुखाकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा तीन माशा ताजा जल के साथ प्रतिदिन सेवन करें। इसी प्रकार यदि निरन्तर छः मास तक सेवन कर लिया जावे तो आयु पर्यन्त बाल सफेद न होंगे जवानी स्थिर रहेगी। दृष्टि में किसी प्रकार का अन्तर न आवेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेवन काल में घृत का अधिक सेवन करे क्योंकि इसमें खुश्की अधिक है।

२३

फोले के लिये मन्त्र

बारह सिंगे का सींग स्त्री के दूध में घिसकर एक सलाई रात्रि को लगाते रहने से पुराने से पुराना फोला भी दूर हो जाता है।

पथ्य—दूध, दही, चावल, प्याज, लस्सन, बैंगन आदि।

पथ्य भोजन—शीघ्र पचने वाली मूंग की दाल, गेहूँ का फुलका, दूध, डबल रोटी आदि।

२४

रतोंदी के लिये अद्वितीय चुटकला

देशी तम्बाकू को सूक्ष्म पीस कर नस्य बना लें और शीशी में सुरक्षित रखें। एक सलाई भर कर रोगी की आंखों में लगादें। थोड़ी देर चुभेगी अवश्य किन्तु रोगी को आराम हो जावेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२५

दाँत की पीड़ा दूर हो

विशुद्ध तारपीन के तेल में रुई की फुरेरी तर करके पीड़ित दांत पर लगाने से ईश्वर की दया से अति शीघ्र आराम हो जाता है। अनेक बार का अनुभूत योग है।

२६

खुश्क खाँशी की उत्तम दवा

एक तोला अलसी को पाव भर पानी में उबाले। जब पाँच तोला पानी शेष रहे तो छानकर दो तोला मिश्री मिला कर ऊष्ण को ही घूंट-२ करके पी लें। इसके कुछ बार के सेवन से वह खुश्क खांसी जो सर्दी लगने के कारण से हुई हो दूर भी हो जावेगी।

२७

दम के लिये संन्यासी अगद

काले मुर्ग की बीट सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें और तीन माशा की मात्रा में प्रतिदिन जल के साथ दिया करें किन्तु रोगी पर दवा का भेद न होने दें, कुछ दिनों में आराम हो जावेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२८

पाण्डु रोग के लिये गुप्त योग

सुहागा आवश्यकतानुसार लेकर लोहे के तवे पर रखें और नीचे आग जलाकर सुहागे को लकड़ी से हिलाते रहें। थोड़ी देर में फूलकर सफ़ेद हो जावेगा। सूक्ष्म पीस कर शीशी में सुरक्षित रखो।

चार रत्ती प्रातः मक्खन में लपेटकर निकलवा दें। पाण्डु रोग से चाहे समस्त शरीर पीला पड़ चुका हो, एक सप्ताह के सेवन से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो जावेगा यह भेद की बात है।

२९

बवासीर के लिये संन्यासी चुटकला

इच्छानुसार उपले लेकर जलालो और उनकी राख को कपड़ छान करके शीशी में सुरक्षित रखो। ६ माशा बासी पानी के साथ कुछ दिन सेवन करने से बवासीर और उसके उपसर्ग आदि मिटकर स्वास्थ्य लाभ होगा।

३०

हर प्रकार के दस्त रोकने का संन्यासी चुटकला

घृत में भुनी हुई भांग २ माशा शहद में मिलाकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रात्रि के समय चटावें । रोगी को खूब नींद आवेगी और दस्त बिल्कुल रुक जायेंगे । हालांकि अतिसार के रोगी को नींद बहुत कम आया करती है ।

३१

बवासीर के लिये चमत्कारी ठंडाई

आम की कोपल एक तोला को पानी में ठन्डाई की भांति घोंटकर मिश्री मिलाकर पिलावें । एक दो दिन में रक्त बन्द होगा ।

३२

हर प्रकार की खाँसी के लिये नुस्खा

मकई का तुक्का (जो दाने निकलने के बाद बाकी रह जाता है) जलाकर पीस लें और उसमें समभाग खांड निकालकर रखो, तीन-२ माशा प्रातः सायं ताजे जल के साथ दें । हर प्रकार की खांसी के लिये लाभदायक है ।

३३

पांडु रोग के लिए एक सन्यासी चुटकुला

कसौंधी के पत्ते आठ काली मिर्च चार दाने मिला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर दस तौला पानी में पीसकर पिलावें गिनती के दिनों में पाडु रोग जावेगा।

३४

खूनी बवासीर की गोलियां

जिस वस्तु को लोग रद्दी समझकर फेंक देते हैं। जानने वाले उन्हीं से लाभ उठाते हैं और वह लाभ जो मूल्यवान औषधियों से भी प्राप्त होना संभव नहीं होता। उस प्रकार के एक योग का वर्णन किया जाता है, जो कि खूनी बवासीर के लिए अत्युत्तम है।

प्रयोग—इमली की छाल को पानी में घिसकर चने के बराबर गोलियां बना लें और प्रति दिन तीन गोलियां पानी से खिलाया करें।

३५

अक्सरी हैजा

निल के पत्ते छः माशा तीन तोला पानी में घोट कर पिलावें इसकी दो मात्रा से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

३६

खुश्क खाँसी की स्वादिष्ट दवा

एक तोला अलसी को पाव भर पानी में उबालो जब पाँच तोला पानी शेष रहे तो छानकर दो तोला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिश्री मिलाकर ऊष्ण को घूंट-२ करके पीलें। इसके कुछ बार के सेवन से वह खुश्क खाँसी जो सर्दी लगने के कारण से हुई हो दूर हो जावेगी।

३७

चेचक के फोले का विशेष प्रयोग

हाथी का नाखून (नख) का एक टुकड़ा लेकर सात दिवस पर्यन्त सिरस के रस भिगो रखो, परन्तु प्रतिदिन रस नया बदल लेना उचित है। तत्पश्चात एक दिन कूप जल में भिगो रक्खे और प्रतिदिन कुछ बूंदें पानी को पत्थर पर डालकर घिसें और सलाई से नेत्रों में लगाया करें।

३८

लाहोरी फोड़े की दवा

अमलासार गन्धक को मिट्टी के तेल में मिलाकर खूब खरल करें। पतली सी मरहम तैयार हो जावेगी। किसी चौड़े मुह की शीशी में सुरक्षित रखो और फोड़े पर रुई का फोया तर करके लगाओ। कई दिन के लगाने से निश्चय ही लाभ हो जावेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३९

सर्प दशन का अकद

सर्प दंक्षित रोगी को हुक्के की नय में से मैल निकाल कर कुछ तो गर्म पानी में घोलकर पिलावें जब तक कि विष वमन होगी फिर पिलावें, जब तक कि विष वमन द्वारा निकलता रहे पिलाते रहें। यह एक आसाम हुआ अकद है।

४०

प्रमेय नाशक आश्चर्यजनक टोटका

मापको दाल को कूटकर समभाग मिश्री मिली दें। दवा तैयार है। मात्रा पौन तोले जल से दें। दो घण्टा बाद इच्छानुसार दूध पिलावें। देखने में साधारण चीज है किन्तु गुणों में सम्पूर्ण है।

विष शान्त करने के उपाय

कभी-कभी मनुष्य अपनी जान देने के लिए तरह-तरह से विष खा लेते हैं। ऐसी दशा में दूसरे लोगों का कोई उपाय नहीं सूझता। जब कभी कोई ऐसी घटना हो जाय तो घर के लोगों को बहुत जल्दी उसका उपाय करना चाहिए। तुरन्त ही उपाय कर देने से मनुष्य की जान बच सकती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विष कई प्रकार के होते हैं। परन्तु किसी के खाने या खिलाने पर वह जिस प्रकार असर करते हैं उसके अनुसार दो प्रकार के होते हैं।

१—जलन पैदा करने वाले।

२—नींद लाने वाले।

जो विष जलन पैदा करने वाले होते हैं, वह होंठ मुह और जीभ में जलन पैदा कर देते हैं और उसमें रोगी बहुत बेचैन होता है।

जो विष नींद लाने वाले होते हैं उनका असर दिमाग में होता है। उसमें मूर्छा आ जाती है या रोगी पागल होकर बकने लगता है।

किसी भी विष के खिलाने के बाद उसका तुरन्त ही उपाय करना चाहिए। विष खा लेने पर उल्टी कराने के लिए तुरन्तु इंतजाम करना चाहिये। उल्टी करने के लिये गरम पानी के घूंट पीना चाहिये गले में उंगली डालकर उल्टी करना चाहिये सब प्रकार के विष ही उपाय से दूर नहीं होते। उनको दूर करने के लिए तरह-२ के उपाय होते हैं। जब कभी कोई विष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खा ले तो पहले यह जानना चाहिए कि उसने कौन-सा विष खा लिया है। यहाँ पर किस विष के क्या लक्षण हैं और उनके कौन से उपाय होते हैं। यह सब लिखे जाते हैं।

संखिया--इसके खा लेने से आधा घंटे बाद उसके लक्षण प्रकट होने लगते हैं। जैसे ही उसके लक्षण प्रकट हों तुरन्त उसका उपाय करना चाहिए।

लक्षण--संखिया खा लेने के बाद नीले या काले रंग की उल्टी होती है, पेट मे जलन और दर्द होता है। प्यास बहुत लगती है और दस्त भी आते हैं। कभी-२ शरीर बहुत ठंडा हो जाता है और नींद सी आती है। इसके दूर करने के लिए नीचे लिखे उपाय करने चाहिये।

उपाय--रोगी को ऐसी चीज खिलानी चाहिए जिससे उसे भली-भांति उल्टी हो जाय। यदि रोगी को उल्टी आ रही हो तो उसे गर्म पानी पिलाकर अच्छी तरह उल्टी करा देनी चाहिए, यदि उल्टी न होती हो तो राई और नमक को पानी में घोलकर पन्द्रह-२ मिनट के अन्तर से पिलाना चाहिए। यदि इससे भी उल्टी न होतो गले में उंगली डालकर करानी चाहिये। उल्टी कराने के बाद अंडों की सफेदी अलसी के दोनो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की चाय या चूने का पानी और तेल पिलाना चाहिए। ऐसा करने से संखिया का विष दूर हो जायेगा।

क्लोरोफार्म-इस विष चढ़ जाने पर रोगी को ताजी वायु का सेवन करना चाहिए, रोगी की जवान को खींचना चाहिए। गर्दन के कपड़े अथवा कोई पहनी हुई चीज निकालकर ढीला कर देना चाहिए, नौसादर को नाक में सुंघाना चाहिए।

अफीम-अफीम खा लेने के आधे घन्टे के बाद ही उसके लक्षण शुरु हो जाते हैं उसके लक्षण इस प्रकार हैं।

लक्षण-अफीम खाने वाले पर नींद और बेहोशी बहुत आती है। आंखों की पुतली छोटी पड़ जाती हैं। रोगी को पसीना बहुत आता है। शरीर में चिप-चिपाहट मालुम होती है।

जब ऊपर लिखे हुए लक्षण किसी आदमी में मालुम हों तो समझ लेना चाहिए कि अफीम खा ली है। ऐसी दशा में दशा में निम्नलिखित उपाय करने चाहिये।

उपाय-रोगी को ऐसी चीजें देनी चाहिए जिनसे उसे उल्टी हो ऐसी चीजें उसको घन्टे-२ पौन-२ घन्टे के बाद देना चाहिये, जिससे उसका पेट बिल्कुल खाली हो जाये, जब रोगी को उलटी हो चुके तो उसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बीस-२ मिनट के बाद तेज कहवा पिलाकर उसे होश में लाना चाहिए। रोगी को सोने बिल्कुल न देना चाहिये। उसको होश में रखने के लिये उसके मुंह पर ठण्डे पानी के छींटे छोड़ने चाहिए। रोगी को जगाये रखने के लिए उसे थप्पड़ मारना, सुई चुभोना और चुटकी भरना चाहिए।

धतूरा-धतूरा खा लेने के बाद दस पांच मिनट से लेकर तीस मिनट पीछे तक इस प्रकार के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

लक्षण-धतुरा खा लेने के बाद नींद खूब गहरी आती है। सिर में चक्कर आते हैं और आंख की पुतली फैल जाती है, रोगी पागल सा हो जाता है और कुछ बेहोशी सी हो जाती है। उल्टी बहुत कम होती है। जब इस प्रकार के लक्षण प्रकट हों तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिये।

उपाय-रोगी को ऐसी चीजें खिलानी चाहिये जिससे उसे उलटी हो, यदि रोगी के गले में कोई चीज न जा सके तो तीन चार मिनट तक मशक में पानी भर कर रोगी के सिर और रीढ़ की हड्डी पर पानी की धार डालनी चाहिए और होश में आ जाने पर उलटी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कराने के लिए दवा देनी चाहिए। यदि इस प्रकार एक दिन रोगी बच जाये तो दूसरे दिन उसे आधी छटांक केस्ट्रायल पिलाकर दस्त लाने चाहिए।

कुचला—इस विष को खा लेने के पन्द्रह मिनट के बाद इसके लक्षण प्रकट होने लगते हैं। नीचे लिखे लक्षण जब किसी में मालुम हों तो समझ लेना चाहिए कि उसने कुचला खा लिया है।

लक्षण—कुचले का विष चढ़ने पर हाथ-पैर ऐंठने लगते हैं और मुंह के जबड़े बन्द हो जाते हैं, जिससे नीचे लिखे उपाय करने चाहिए।

उपाय—नमक या राई को पानी में घोलकर पिलाना चाहिये, इससे उलटी होगी। जिसने विष खाया हो उसे उलटी बहुत ज्यादा करानी चाहिए, जिससे उसके पेट में कुछ रह न जाय। इसके बाद हड्डियों के कोयला एक औंस पानी में घोल कर पिलाना चाहिए। साथ-साथ अलसी के दाने की चाय या कत्थे का जुशांदा बहुत सा पिलाना चाहिए।

कार्बोलिक एसिड—यह भी एक प्रकार का विष है इसको खा लेने के बाद इस प्रकार के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्षण-मुंह और होठों पर प्रायः धब्बे पड़ जाते हैं और ज्ञान तन्तु खराब हो जाते हैं। इस प्रकार के लक्षण जब प्रकट हों तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिए।

उपाय-जिस मनुष्य ने विष खा लिया हो उसे सबसे पहले और जलदी ऐसी चीजें खिलाना-पिलाना चाहिये जिनसे उसे उलटी हो जाय रोगी को सलाद का तेल पिलाना चाहिए इसके सिवा रोगी को दूध अवश्य पिलाना चाहिये।

पोटाश-यह भी एक प्रकार का विष है। इसमें रोगी को सिरका पिलाना चाहिये। नीबू का रस या कड़वा तेल पिलाना चाहिये इसके सिवा ईसबगोल खिलाना चाहिए।

शीशी-यह प्राण घातक होता है, इसके खा लेने पर कभी-कभी बड़ा भयानक परिणाम हो जाता है। यदि संयोग से कभी कोई शीशी खा ले तो उस समय उसको ऐसी चीजें खिलाना चाहिये जिससे अच्छी तरह उलटी हो जाय। उलटी कर लेने से शीशी उलटी के साथ निकल जायेगी। यह सभी लोग जानते हैं कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उल्टी करने के लिये कौन-सी चीजें होती हैं। इसको यहां पर बताने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इसके लिये आधा सेर या डेढ़ पाव गरम पानी में करीब १ रत्ती, उस समय यदि मिल सके तो इपसम साल्ट (मैग्नेशियम सल्फेट) को घोलकर पिलाना चाहिए।

जब कभी कोई मनुष्य विष खाले और होश में आ जाय तब उससे इस प्रकार प्रश्न करना चाहिए। तुम्हारे मुंह का स्वाद कैसा है? खट्टा है, कड़ुवा है या चरपरा है?

यदि मुंह का स्वाद कड़वा हो तो रोगी को खट्टी चीज खिलानी चाहिए। यदि खट्टा हो तो खड़िया मिट्टी या साबुन का पानी चूने में घोलकर रोगी को पिलाना चाहिए। यदि कड़ुवा स्वाद हो तो सिरका, नारंगी या नीबू का रस पानी में घोलकर देना चाहिए या जैतून का तेल पिलाना चाहिए। यदि रोगी बेहोश हो तो उसे होश में लाने के लिए ठण्डे पानी के छींटे उसके मुंह पर देने चाहिये।

जहरीले जानवरों और कीड़ों के काटने का विष

हम लोगों के घरों में प्रायः ऐसे कीड़े निकला करते हैं जो बहुत विषैले होते हैं। वह काट खाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राय: विषैले कीड़ों के काट लेने से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

जो मकान कच्चे होते हैं उनमें कीड़े-मकोड़े निकला करते हैं। परन्तु पक्के मकानों में कभी-कीड़े विषैले कीड़े निकला करते हैं।

सांप, बिच्छू कनखजूरा जो कि बहुत विषैले कीड़े होते हैं उनके काटने पर यदि तुरन्त ही कुछ उपाय नहीं किया जाय तो काटे हुए मनुष्य की जान का खतरा होता है। इस प्रकार के जितने जहरीले कीड़े होते हैं उनके काटने पर क्या करना चाहिए। इसके सम्बन्ध में प्रत्येक गृहस्थ को जानना चाहिए संयोग से जब कभी ऐसा मौका पड़े तो उस समय बिना घबराहट के बताई हुई दवाओं का प्रयोग करना चाहिये।

इस परिच्छेद में जहरीले जानवरों और कीड़ों के काटने पर उनके उपाय किये जायेंगे। इनको पढ़कर प्रत्येक गृहस्थ को समय पड़ने पर लाभ उठना चाहिये। विशेषकर जो लोग देहातों में अथवा ऐसी जगहों में रहते हैं जहां पर डाक्टर, वैद्य हकीम नहीं होते वहां जब इस प्रकार की घटनायें हो जाती है तो बड़ी कठिनाई पड़ती है। ऐसी दशा में लोगों को कोई उपाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं सूझता। यदि वह इन बातों के लिये कुछ उपाय जान लें तो उन्हें कोई कठिनाई न पड़े और वह परेशान न हों। किसी भी कीड़े के काटने पर उसका एक ही उपाय नहीं है। उसके अनेकों उपाय है जो यहां लिखे जायेंगे। यदि किसी एक चीज से लाभ न हो तो दूसरी चीज का प्रयोग करना चाहिये। यहां पर जितने उपाय बताये जायेंगे बहुत लाभदायक और अनुभव किये हैं। उन पर सबको विश्वास रखना चाहिए।

बहुत से लोग दवायें जानते हैं किन्तु यदि उसके घर में कोई ऐसी घटना हो जाती है तो वह मारे घबराहट के जो कुछ जानते हैं उसे भूल जाते हैं और परेशान होते हैं ऐसे समय में उन्हें घबराना नहीं चाहिए। बल्कि जो कुछ वह जानते हों उसे करना चाहिये।

सांप के काटने पर—सांप बहुत विषैला कीड़ा होता है। इसके काटने पर प्रायः आदमी की मृत्यु हो जाती है। यदि दुर्भाग्य और संयोग से किसी को सांप काट लें तो उसी समय निम्नलिखित दवाओं का प्रयोग करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१–जिसको सांप ने काट लिया हो उसे तुरन्त ही आधा सेर तीन पाव घी अथवा अन्य कोई अन्य ऐसी चीज जिससे उल्टी हो जाय पिला देनी चाहिए इससे उल्टी हो जायगी और विष उल्टी के साथ निकल जायेगा।

२–सांप के काटने पर तीन माशे नौशादर पानी में घोलकर पी लेना चाहिये। इससे सांप का विष निकल जायेगा। पाँच मिनट के बाद छः मासे नौशादर पीसकर सांप के काटे मनुष्य को थोड़ी-२ देर पर सुंघाते रहना चाहिए। फिर इसके नाक के दोनों नथनों में भरकर नथनों को बन्द कर देना चाहिए। जितनी देर तक नथने बन्द करें उतनी देर तक रोगी के हाथ पैर पकड़े रहना चाहिए।

३–पीने वाला तम्बाकू देकर और छटांक पानी में घोलकर सांप के काटे हुये आदमी को पिला देना चाहिए। जब सांप ने काटा हो उसी समय पिलाना चाहिये जिससे तुरन्त उल्टी हो जाय और विष बाहर निकल जाय।

४–सांप के काटे हुये आदमी को केले के पेड़ के बीच का गूदा कूटकर और उसका रस निकाल कर पिलाना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५–यदि मोर के अण्डे मिल सकें तो उनमें छोटे छोटे छेद करे और उन छेदों में काली मिर्च भर कर छेदकों को मोम से बन्द करदें। इसमें कालीमिर्च अण्डों के रस को चूसकर फूल जायेंगी। काली मिर्च और अण्डों के छिलके छाया में सुखाकर रख लेना चाहिये।

यदि किसी को सांप काट खाय तो उसे आधा सेर केले डन्ठल के पानी में चौदह दाने काली मिर्च को पीसकर पिलाना चाहिए।

६–एक सेर गौ के मूत्र में पाव भर गौ का गोबर मिलाकर छान लेना चाहिए। अब जिस मनुष्य को सांप ने काटा हो उस कटे हुए स्थान का खून निकाल गौ मूत्र और गोबर पुल्टिस बांधना चाहिए, इससे रोगी अच्छा हो जायगा।

७–हुक्के के नेहचे में जमी हुई कीट को घी में मिलाकर चने के बराबर गोलियां बना लेना चाहिये। इन गोलियों को थोड़ी-२ देर के बाद सांप के काटे हुए आदमी को खिलाना चाहिये और गोलियों को काटे स्थान पर लगाना चाहिये, बहुत लाभ होगा।

८–छः माशे साठी की जड़ ग्यारह दाने काली मिर्च, दोनों को पानी में घोलकर सांप के काटे हुए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगी को तीन चार बार पिलाने से वह अच्छा हो जावेगा।

९—गांजा पीने की चिलम में पड़ी हुई काली पपड़ी को निकाल कर खूब महीन पीस लेना चाहिए फिर उस पिसी हुई पपड़ी को पानी में घोलकर पहले काटे हुए स्थान को किसी तेज औजार से इतना छील लेना चाहिए कि लाल रंग का खून निकल आवे। इसके बाद में पानी घोली हुई पपड़ी को काटे हुए स्थान पर खूब अच्छी तरह मल देना चाहिए। यदि औजार से छीलने पर लाल खून न निकले तो उसे कई बार घिसना चाहिए और यदि इस पर भी लाल रक्त न निकले तो आंखों की पलकों को उलट कर इसी दवा को लगाना चाहिए।

१०—दस तोले पानी में पांच तोले खाने का तम्बाकू घोलकर सांप के काटे हुए आदमी को पिला देना चाहिए। इससे कै हो जायेगी और सांप का जहर निकल जाएगा। परन्तु यदि बेहोश होतो उसके गले में डालना चाहिए। जिससे उसके पेट में पहुँच जाय और उसे उलटी हो जाय। यदि रोगी बेहोश में हो उसके दांत बन्द हो गये हों तो उसकी नाक से पानी उसके पेट में पहुँचना चाहिए। इससे उसको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होश आ जायेगा और पेट से उल्टी द्वारा सारा विष भी निकल जायगा।

१—सफेद कनेर की जड़ बारह तोले लेकर उसमें सात दाने कालीमिर्च मिलाकर पानी लेना चाहिये। और इसको पीसकर एक शीशी में भर लेना चाहिये। एक घण्टे के बाद शीशी हिलाकर रोगी को पिला देना चाहिये।

२—चिचिटा या अपामार्ग डन्ठल, जड़ पत्ती और तीनों को पानी में पीसकर सांप के काटे हुये स्थान पर लगा देना चाहिए और इसको पिलाना भी चाहिये, जब रोगी को यह कडुवा मालुम न हो तब बराबर पिलाते रहना चाहिये।

इन दवाओं के सिवा विषैले कीड़ों के काटने पर प्राकृतिक चिकित्सा से आश्चर्यजनक लाभ होता है। प्राकृतिक चिकित्सा पर लोगों को विश्वास होना चाहिए, उसमें मिट्टी और जल के द्वारा अच्छा किया जाता है। इसलिये यह समझना चाहिये कि मिट्टी और पानी क्या हो सकता है। यहां प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार कुछ उपाय बताये जायेंगे, उन पर खूब विश्वास करना चाहिए। किसी भी विषैले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानवर अथवा कीड़े के काटने पर, उसके विष को निकालने के लिए उस स्थान पर गीली मिट्टी बार-बार-बांधनी चाहिये। मिट्टी में विष खींचने कीशक्ति होती है जो यहां बताई जाती है।

चिकित्सा के लिये किसी नदी के किनारे की लाल मिट्टी लाकर उसका प्रयोग करना चाहिये, यह लाभदायक होती है किसी गन्दी जगह की मिट्ठी काम में न लानी चाहिए। यदि लाल मिट्टी न मिल सके तो कुछ नीली और बलुई मिट्टी जो चिकनी हो काम में लाना चाहिए, इसको बहुत ध्यान में रखना चाहिये कि वह गन्दी अथवा उसमें किसी प्रकार का कूड़ा कर्कट न मिला हो इस प्रकार की मिटटी को लेकर उसे महीन पीस कर और छानकर ठण्डे पानी से गाढ़ी सान कर उसका प्रयोग करना चाहिए।

बिच्छू के डंक मारने पर—बिच्छू एक जहरीला कीड़ा होता है। जब यह डंक मारता है तो बहुत पीड़ा होती है। इसके लिये नीचे लिखे उपाय उपयोगी है—

१—जिस स्थान पर बिच्छू ने डंक मारा हो, उस स्थान पर निर्मली के बीजों को पानी में भिगो कर और घिस कर लगाना चाहिए। इससे बहुत लाभ होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२–बिच्छु के डंक मारे हुए स्थान पर छः माशे नौशादर रखकर ऊपर एक मोटे कपड़े की पटटी बांधकर ऊपर से ठण्डे पानी की धारा कुछ देर तक छोड़ाना चाहिये। बहुत लाभ होता है।

३–खटाई और चूना बिच्छू के काटे हुये स्थान पर लगाने से दर्द दूर होता है।

४–दियासलाई की सींकों का मसाला पानी में घिस कर डंक मारे हुए स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

५–जिस मनुष्य को बिच्छू ने डंक मारा हो उसे एक माशा चूना पानी में घोलकर पिला देने से विष उतर जाता है।

६–पुरानी खाल को जलाकर बिच्छू के डंक मारे हुए स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

७–जमाल घोटा बिच्छू के डंक मारे हुये हुये स्थान पर लगाने से फायदा होता है।

८–जिस स्थान पर बिच्छू ने डंक मारा हो, केवल उसी स्थान पर तेजाब की बूंदें डालना चाहियें इससे बहुत फायदा होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

९—सीताफल के डन्ठल को पानी में घिसकर बिच्छू के डंक मारे हुए स्थान पर लगाने से विष दूर होता है।

१०—बिच्छु के काटे हुए स्थान पर मूली के पत्तों का रस निकालकर लगावें। बहुत फायदा होगा।

११—डंक मारे हुए स्थान पर शहद और घी बराबर का मिलाकर लगाने से फायदा होगा।

१२—जिस स्थान पर बिच्छू डंक मार दे उसके कुछ नीचे तक चिबड़े (आपामार्ग) को जड़ को हाथ से मलना चाहिये और उसको पीस कर लेप करना चाहिये।

बर्रं के काटने पर—बर्रं के काटने पर काटी हुई जगह में जलन होने लगती है, पीड़ा होती है और वह स्थान सूज भी जाता है। जब किसी को बर्रं काट ले सो नीचे लिखे उपाय करने चाहिये।

१—जिस स्थान पर बर्रं ने काटा हो वहां गेंदे की पत्ती खूब मलनी चाहिये।

२—शहद और घी बराबर मिलकर बर्रं के काटने पर लगाने से फायदा होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३–जिस स्थान पर बर्र ने काटा हो उस स्थान पर नौशादर और चूना मिलाकर मलना चाहिए। इससे फायदा होता है।

४–बर्र के काटे स्थान पर दियासलाई की सींकों को भिगोकर उसका मसाला घिस कर लगाना चाहिये। इससे बहुत फायदा होता है।

कुत्तों के काटने पर–कुत्ते के काटने पर भी शरीर में विष फैल जाता है। हड़काये हुए जानवरों के काटने से बहुत खतरा रहता है। कुत्ते के काटने पर पहले यह पता लगाना चाहिये कि वह हड़काया हुआ और फिर उसी के अनुसार उसका उपाय करना चाहिए।

१–काटने के बाद जो कुत्ता छिपता फिरे उसका ढंग बदला हुआ हो या बिना छेड़े दूसरे जानवरों और मनुष्यों को काटने पर उन पर हमला करने को दौड़ता हो; ऐसे कुत्ते कभी-२ अपने मालिक के साथ प्यार प्रकट करते हैं और उसे नहीं काटते।

२–कुत्ता घर से दूर भागने की इच्छा करे।

३–हड़काये हुए जन्तुओं के निचले जबड़े पांव कमजोर हो जा जाते हैं।

४–कुत्ते के मुंह से झाग या राल बहती हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५–कुत्ते के भौंकने का ढंग बदला हुआ हो।

६–कोई लकड़ी या और कोई दूसरी चीज उसकी तरफ बढ़ाकर देखना चाहिए यदि कुत्ता गुस्सा करके उस पर लपके तो समझ लेना चाहिए कि यह हड़-काया हुआ है।

जो जन्तु पानी से डरता हो उसे निश्चय ही हड़काया हुआ समझना चाहिये।

जब किसी को कुत्ता काट खाय तो उसके घाव को तुरन्त ही धो देना चाहिये और जब वह सूख जाय तो उसको किसी जलाने वाली दवा से अच्छी तरह जल देना चाहिये। इसके सिवा कुत्ते के काटने पर नीचे लिखी दवाओं का प्रयोग करना चाहिये।

१–कुत्ते के काटे हुये जख्म में लाल मिर्च पीस कर भर देनी चाहिये।

२–कुत्ते की विष्ठा जलाकर काटे हुए घाव में भर देने से लाभ होता है।

३–जिस स्थान पर कुत्ते ने काटा हो उस स्थान पर ग्वार के पत्तों को एक ओर छीलाकर और उस पर पिसा हुआ बरीक सैंधा नमक छीलाकर बांध देना चाहिए। इसे दो तीन दिन बराबर बांधना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४–कुत्ते ने जिसको काटा हो उसको चिचड़े की जड़ पीसकर शहद के साथ चाटनी चाहिए।

५–कुत्ते के काटे हुए घाव में एक पत्ती कुंचला पीसकर बराबर सात दिन लगाना चाहिए।

६–यदि पागल कुत्ते ने काटा हो रोगी को केले की एक पकी हुई फली तीन टुकड़े करके उसमें शेर की खाल के बाल साफ करके एक २ रत्ती केले के टुकड़े में भरकर एक-एक घण्टे के बाद खिलाना चाहिये।

कुत्ते के काटने पर जो उपाय किये जाते हैं, वही उपाय बिल्ली और सियार के काटने पर भी करने चाहिये।

–※–

जादू के आश्चर्यजनक खेल

मदारियों के गुप्त भेद

हाथ सफाई के वह शब्द जिन्हें देखकर लोग आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

लाग के अद्भुत करिश्मे

संसार के हर देश में हजारों लाखों स्त्री पुरुष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जादू के खेल और तमाशे देखने में न मालुम कितना रुपया पैसा खर्च कर देते हैं। सभी लोग इन खेलों को बड़े चाव से देखते हैं और इनको देख-२ कर आश्चर्य चकित रह जाते हैं इस प्रकार के खेल दिखाने वाले सैंकड़ों और हजारों रुपये कमाते हैं और उनको रुपये पैसे की कमी नहीं रहती। चुनांचे हमारे देश में भी ऐसे खेल दिखाने वाला जादूगर, पिछले दिनों नगर-नगर घूमकर, साइन्स के अद्भुत करिश्मे, हाथ की सफाई के खेल दिखाता रहा है। उसका नाम गोगिया पाशा था लोग उसके खेल देखकर आश्चर्यान्वित रह जाते थे। उसके हर ट्रिक या खेल पर तालियों पर तालियां बजती थीं और तमाशा देखने वाले उसके अन्य खेलों को देखने के लिए उत्सुक और लालायित हो उठते थे। गोगिया पाशा आजकल अमेरिका में अपने खेलों का प्रदर्शन कर रहा है और झोलियां भर-भर कर वाह-२ लूट रहा है और उसके साथ ही हजारों रुपये पैदा कर रहा है। लेकिन गोगिया पाशा या उसी किस्म के दूसरे खेल दिखाने वाले जो खेल दिखाते हैं क्या वह वास्तव में जादू के खेल होते हैं; इसके सम्बन्ध में यहां पर यह निवेदन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करूंगा। बात यह है कि इनमें जादू तो कुछ भी नहीं होता, हां इसमें चतुरता और सफाई अवश्य होती है। खेल दिखाने वाला जितना अधिक फुर्तीला, चरबे जबान, चुस्त चालाक, हंसमुख, रोबीला, मीठा और तेज आवाज वाला होता है। वह उतना ही अधिक 'कामयाब जादूगर' होता है और चूंकि देखने वालों को वह जादू के खेल मालुम होते हैं।

ऐसे खेल दिखाने वाले प्रायः शहरों और देहातों में मेलों पर अपने खेल दिखाया करते हैं कभी-२ दो-दो या तीन-तीन या उससे अधिक आदमी उनके संग रहते हैं। तमाशा करने वाला और उसके साथी जादूगर नहीं होते, केवल अपने अभ्यास के कारण कहलाते हैं। अभ्यास करके मनुष्य कठिन से कठिन काम भी करके दिखा सकता है। जिस चीज का जितना भी अभ्यास किया जाता है उतनी ही उसे आसानी से किया जा सकता है। जो खेल के नाम से पुकारे जाते हैं, जैसा कि मैं ऊपर कह आया हूँ वह केवल हाथ की सफाई के खेल होते हैं। बस उनके करने में ही इतनी फुर्ती और सफाई होती है कि देखने वाले समझ नहीं सकते।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार जादू के खेल तमाशों को देखने की सभी लोग इच्छा रखते हैं और बड़ी दिलचस्पी के साथ उन्हें देखते हैं। इसके साथ ही देखने वाले इन जादू के खेलों की तरकीबों को जानने के बड़े इच्छुक रहते हैं। इसलिए इस छोटे से परिच्छेद में पाठकों के मनोरंजनार्थ साधारण जादू के खेल और तमाशों के करने से कोई भी मनुष्य इसको करके दिखा सकता है।

चिराग से रूमाल पैदा करना

जादूगर रूमाल के अनेक तरह के खेल दिखलाया करते हैं उनमें एक खेल नीचे दिया जाता है।

जादूगर अपने दोनों खाली हाथ दर्शकों को दिखाता है। पीठ की तरफ से भी दिखाता है यकायक हाथों को मलते हुए वह एक रोशनी पैदा कर देता है फिर हाथों को मलते-२ ही वह उसे गायब कर देता है और थोड़ी देर बाद एक मोम वाले शमादान से उसे फिर पैदा कर देता है। इस खेल से दर्शक बहुत चकित और प्रसन्न होते हैं।

इस खेल के दिखाने में कई प्रकार के लाग की जरूरत होती है खेल दिखाने वाला अपने सीधे हाथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की दूसरी और तीसरी उंगली के दरम्यान, उंगली की शक्ल की रबड़ की बनी हुई एक मसनूई उंगली आपको जादू के खेलों का समान बेचाने वालों के यहां मिल सकती है। इसके अन्दर लाल रंग का रेशमी रूमाल रखा होता है। दोनों हाथों को खुला हुआ दिखाकर जादूगर बांयें हाथ की हथेली सीधे हाथ को पीठ पर रखता है और सफाई से बांयें हाथ में मसनुई उंगली ले लेता है, जिसे वह मुट्ठी में दबाये रखता है और मसनुई उंगली के खुले हिस्से में से रूमाल का छोर पकड़कर निकालाता है और दर्शकों हिलाकर दिखाता है। दर्शक यही समझते हैं कि हाथ की मुट्ठी में से रूमाल पैदा होकर निकलाता है। दर्शकों की निगाह और ध्यान रूमाल की तरफ जाता है। बीच में जादूगर ध्यान बांटने का फायदा उठाकर बांये हाथ को नीचे गिराता है और मसनुई उंगली को कोट की खुली बांई जेब में डाल देता है।

रूमाल पैदा होने के बाद फिर उसके गायब होने की नौबत आती है। उसके लिए लाग की जरुरत पड़ती है।

कमीज के सीधे कन्धे की बाँह में एक रबड़ का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तार यानी एलास्टिक भीतर की तरफ लगा होता है जिसके दूसरी ओर एक सूराख होता है। जो आस्तीन के कफ में लगी हुई पिन में हिलगा है। जब खेल करने वाला रूमाल को गायब करने के लिए उसे हाथों की हथकड़ियों के बीच मलता है तो उस वक्त कफ की पिन में एलास्टिक निकालकर रूमाल के एक कोने को एलास्टिक के सूराख में लगा देता है। इस सफाई के करने में अधिक दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ता हाथों की हथकड़ियों को मलते हुए जब जादूगर अपने दोनों हाथों को हवा में रुमाल गायब करने के लिए ऊपर उठाता है, उस वक्त दर्शकों की दृष्टि हाथ के ऊपर हवा की तरह जाती है और रुमाल एलास्टिक की सहायता से पाप की आस्तीन के भीतर होता हुआ बिजली की गति से, कमीज के भीतर सीधे कंधे के पास पहुँच जाती है। इस चालाकी की तरह दर्शकों का ध्यान जा नहीं सकता उनकी निगाह ऊपर जाती है और है और वही समझते हैं कि रुमाल हवा में गायब हो गया।

समाप्त

-*-

मुद्रक : राजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, बंगालीघाट मथुरा.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh